



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

सए सए उवदणै,  
सिद्धिमेव ण अन्नहा।  
अपने मत की प्रशंसा करने वाले  
कहते हैं—अपने-अपने सांप्रदायिक  
अनुष्ठान में ही सिद्धि होती  
है, दूसरे प्रकार से  
नहीं होती।

नई दिल्ली

• वर्ष 25 • अंक 6 • 13-19 नवंबर, 2023



प्रत्येक सोमवार

• प्रकाशन तिथि : 11-11-2023 • पेज : 12

₹10 रुपये

## आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ पारमार्थिक शिक्षण संस्था का प्रथम अधिवेशन जो उपलब्ध है उसका त्याग करना सच्चा त्याग : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ५ नवंबर, २०२३

जन-जन के तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना व पावन आशीर्वाद की कृपा करते हुए फरमाया कि अर्हत वाङ्मय में एक दशवैकालिक आगम है, जो चारित्रात्माओं से बहुत परिचित है। कई चारित्रात्माएँ इसे पूर्णतया या अंश रूप में याद करते हैं।

उसमें बताया गया है कि त्यागी कौन होता है? अभाव और विवशता में जो भोग सेवन नहीं कर सकता वह त्यागी नहीं हो सकता। जो उपलब्ध है—कांत-प्रिय उपभोग उनको जो पीठ फेरकर छोड़ देता है, भीतर से विरक्ति हो जाती है, वह व्यक्ति त्यागी बन सकता है। आदमी के जीवन में वह समय भी कितना महत्त्वपूर्ण होता है जब वह सर्वविरति रूप त्याग को—चारित्र को स्वीकार कर लेता है। अनंतकाल की यात्रा में भी वे समय धन्य है, जो समय चारित्र



के तौर पर उनके भवन में जाकर पढ़ाता था। इस संस्था का विकास हुआ है। श्रावक भी इनकी व्यवस्था देखते हैं। मुमुक्षु बहनों तेरापंथ समाज की बेटियाँ हैं, समाज भी इनका ध्यान रखे।

पचहतरवें वर्ष में पहला अधिवेशन आज शुरू हुआ है। अधिवेशन विकास की प्रेरणा वाला बने। संस्था व गुणवत्ता बढ़ती रहे। मुमुक्षु बहनों भावी साधवियों हैं। इनका अच्छा निर्माण होता रहे। मुमुक्षु भाई भी अच्छा शिक्षण प्राप्त करते रहें। अमृतायन का स्थान भी संख्या की दृष्टि से कम पड़े ऐसी अनुप्रेक्षा है।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि देश में अनेक शिक्षण संस्थाएँ चलती हैं किंतु पा०शि० संस्था का उद्देश्य परमार्थ है, इसलिए यह विशेष संस्था है। यहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले मुमुक्षु कहलाते हैं। मुमुक्षु वह होता है, जो शम की साधना करता है। कषायमंदता की साधना करते हुए ऋजुता की ओर आगे बढ़ता है। मुमुक्षु में संवेग भाव निर्वेद की साधना होती है।

(शेष पृष्ठ २ पर)



पालन में व्यतीत होता है।

आचार्य भिक्षु ने जब से भाव दीक्षा ग्रहण की थी, तब से हमारा ये धर्मसंघ शुरू हुआ था। आचार्य भिक्षु स्वयं परखकर दीक्षा देने वाले थे। प्रायः दीक्षाएँ परम पूजनीय आचार्यों द्वारा संपन्न हुए हैं, तो अनेक-अनेक मुमुक्षु साधु-साधवियों द्वारा भी दीक्षित हुए हैं।

दीक्षा बहुत बड़ी चीज है, उसके लिए तैयारी भी अच्छी हो। पूज्य आचार्य तुलसी के समय यह चिंतन पुष्ट हुआ कि दीक्षा से पहले शिक्षा हो। साथ में परीक्षा भी हो। समीक्षा भी हो। इस शिक्षा के इर्द-गिर्द सूई घुमी होगी तो इस पारमार्थिक शिक्षण संस्था

ने मजबूती को प्राप्त किया। एक महनीय संस्था आचार्यश्री तुलसी की निशामें प्रारंभ हुई। वि०सं० २००५ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को। आज वह संस्था अपने पचहतरवें वर्ष में चल रही है।

इस संस्था में बहुलांश भाग तो बाईयों का होता है, पर एक अंश पुरुषों का भी होता है। मुमुक्षु बाईयों उच्च श्रेणी से शिक्षित हो रही हैं। शिक्षण युक्त दीक्षाएँ ज्यादा समीचीन हो सकती है। एक फाउंडेशन का अच्छा क्रम बन सकता है। पा०शि० संस्था भले ज्यादा गरजे नहीं पर काम अच्छा ट्रेनिंग का चल रहा है। परमार्थ की शिक्षा का महत्त्व है। अनेक कार्यकर्ताओं ने समय लगाया है,

वर्तमान में भी लगा रहे हैं।

मुमुक्षु बहनों के शिक्षण में समणियों का बड़ा संयोग रहता है। यह संस्था अलग तरह की है, इसकी अलग व्यवस्था होती

है। आज अधिवेशन शुरू हुआ है। यहाँ साधना के संस्कार चलते रहें। मैंने भी संस्था में प्रवेश तो नहीं किया पर दीक्षा के बाद संस्था में प्रवास किया था। एक अध्यापक

## जीवन के आधारभूत तत्त्व हैं—आत्मा और शरीर : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ६ नवंबर, २०२३

अर्हत वाणी के उद्गाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र के पच्चीसवें शतक की विवेचना करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में आत्मा तो महत्त्वपूर्ण और मूल तत्त्व है ही, उसके साथ शरीर, वचन और मन भी जुड़ा हुआ है। शरीर न हो तो वचन और मन भी नहीं हो सकता। ऐसा तो हो सकता है कि किसी प्राणी के शरीर तो है, पर वचन या मन न भी हो।

मन और वाणी का शरीर आश्रय होता है। शरीर है तो द्रव्य इंद्रियाँ हैं। यहाँ प्रश्न किया गया है कि योग कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है? जीवन के आधारभूत तत्त्व हैं—आत्मा और शरीर। इनके योग से हमारा सांसारिक जीवन निष्पन्न होता है। संयोग से जो चीज होती है, उसका नाश वियोग से होता है। शरीर आत्मा का

वियोग होना मृत्यु है। हमेशा के लिए सभी शरीरों का आत्मा से वियुक्त हो जाना, वह मोक्ष हो जाता है।

जीवन है तो शरीर, मन और वाणी की प्रवृत्ति भी होती है। योग तीन हो जाते हैं—शरीर, वाणी और मन। सबसे कम

मन वाले प्राणी, उससे अधिक वचन योग वाले प्राणी होते हैं। काययोग तो संसारी प्राणियों के सभी के होता ही है। चौदहवें गुणस्थान की बात अलग है। वह तो अयोगी अवस्था है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

**महावीर का परिनिर्वाण  
गौतम पाए केवलज्ञान**

भगवान महावीर के  
2559वें निर्वाण कल्याणक दिवस पर शत-शत नमन  
एवं  
दीपमालिका पर्व पर आध्यात्मिक मंगलकामनाएं

**तेरापंथ टाइम्स परिवार**



## शुभ लेश्या और शुभ योग में रहकर अपनी भावधारा निर्मल रखें : आचार्यश्री महाश्रमण



**नंदनवन, ३ नवंबर, २०२३**

आज साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी का बारहवाँ दीक्षा दिवस है। लगभग ग्यारह वर्ष पूर्व जसोल चातुर्मास-२०१२ में पूज्यप्रवर द्वारा दीक्षित हुई थी। वर्तमान में आप परम पावन की निश्चा में साध्वीवर्या पद पर अपनी सेवाएँ धर्मसंघ को दे रही हैं।

जीवन नैय्या के खेवनहार

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का रसास्वाद करवाते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में आत्मवाद का सिद्धांत है। जो जैन वाङ्मय का मुख्य सिद्धांत है। अनेक विचारधाराएँ भी आत्मा-पुनर्जन्म को मानने वाली हो सकती हैं। जैन दर्शन में आत्मा का विभन्न संदर्भों में वर्णन प्राप्त होता है। भगवती सूत्र तो मुख्य आधार है जैन आगम तत्त्वज्ञान, आत्मा के

संदर्भ में और आत्मा से जुड़े हुए अनेक विषय हैं।

आत्मा से जुड़ा हुआ एक विषय है-लेश्यावाद। आत्मा है, तो आत्मा के साथ कर्मवाद की बात है। लेश्यावाद की अवधारणा है कि संसारी प्राणी मोक्ष जाने के अंतिम समय में अलेश्य स्थिति में पहुँच जाता है। बाकी संसारी प्राणी किसी न किसी लेश्या में रहते हैं। लेश्यायुक्त रहता है।

जैन तत्त्व दर्शन में योग और लेश्या ये दो चीजें आती हैं। शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति यह योग है। लेश्या परिणाम धारा है। भाव लेश्या ही परिणामधारा है। लेश्या और योग मानो ये घनिष्ठ मित्र हैं। जहाँ लेश्या है, वहाँ योग है। जहाँ-जहाँ धुआँ है, तो वहाँ अग्नि भी है। पर जहाँ-जहाँ अग्नि है, वहाँ धुआँ हो ही जरूरी नहीं है। धूम्र रहित अग्नि हो सकती है। पर योग लेश्या के बारे में ये बात नहीं है। जहाँ-जहाँ योग या लेश्या है, वहाँ लेश्या

या योग होगा ही। दोनों में साहचर्य है। योग या लेश्या एक-दूसरे को छोड़ते नहीं हैं। जैसे तेरहवें गुणस्थान का केवली।

पूर्णतया अयोग अवस्था तो चौदहवें गुणस्थान में ही आती है, बाकी पहले गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक योग व लेश्या रहते हैं। लेश्याएँ छः बताई गई हैं। कृष्ण, नील, कापोट ये तीन लेश्याएँ अधर्म-अशुभ लेश्याएँ हैं। तेज, पदम और शुक्ल लेश्या धर्म-शुभ लेश्याएँ हैं। कृष्ण लेश्या से कम खराब नील लेश्या है, इस तरह उत्तरोत्तर लेश्याएँ बढ़िया होती रहती हैं। क्रमशः विकास है। हमारी भावधारा अच्छी रहे, हम शुक्ल लेश्या में रहें।

जिस लेश्या में आदमी मरता है, उसी लेश्या में आगे पुनः जन्म लेता है। लेश्याओं का भी नियम है कि किस जीव में कितनी लेश्याएँ होती हैं। द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से है। मनुष्य में छह लेश्याएँ होती हैं। आचार्यश्री भिक्षु ने तो भगवान

महावीर जब छद्मस्थ काल में थे तो उनमें भी छह लेश्याएँ मान्य की थी। ऐसी तेरापंथ की मान्यता है। किसी सिद्धांत के संदर्भ में बताई गई है। शुभ लेश्या और शुभ योग में हम रहें। हम भावधारा को निर्मल रखें, यह हमारे लिए काम्य है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी के भी तीन पर्याय-समणी पर्याय, साध्वी पर्याय और साध्वीवर्या पर्याय हो जाते हैं। साध्वीवर्या भी खूब धर्मसंघ की सेवा करती रहे। लेश्या व योग शुक्ल बना रहे।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि लक्ष्य हमारा ऊँचा होना चाहिए। वह लक्ष्य हो जा हमें परमार्थ की ओर ले जाने वाला हो। हमें उदितोदित विकास करते रहना है। ऐसे मनुष्य अपने कृतत्व से महान माने जाते हैं। हमारे भीतर के दुर्गुणों को हम त्यागें और सदगुणों में आगे बढ़ते जाएँ। हमारी आंतरिक जागरूकता रहे। आत्मा, संयम और परमात्म पद के लिए हमारे में सजगता रहे।

## जीवन में धर्म की साधना करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**नंदनवन, २ नवंबर, २०२३**

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आर्ष वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के चौबीसवें उद्देशक में कहा गया है कि पुनर्जन्म का सिद्धांत प्रसिद्ध सिद्धांत है। जैन दर्शन में यह मजबूती से स्वीकृत है। पुनर्जन्म है, तो पूर्वजन्म भी है। दोनों के बीच में वर्तमान का जीवन। पूर्व में हमारी आत्मा ने अनंत-अनंत बार जन्म-मरण कर लिए हैं।

आत्मा और शरीर का वियोग है, वह मृत्यु है। जब तक दोनों साथ थे तब तक जीवन था। मृत्यु तो है आत्मा और शरीर का कुछ समय के लिए अलग हो जाना और मोक्ष है-आत्मा का सभी शरीरों से अलग हो जाना, आत्यंतिक वियोग हो जाना। मृत्यु में तो स्थूल शरीर से अलगाव होता है, पर सूक्ष्म-सूक्ष्मतर शरीर हो वो शरीर पुनर्जन्म में आगे जाते हैं।

जैन दर्शन में पूर्वजन्म और पुनर्जन्म दोनों के नियम विस्तार से मिलते हैं। पूर्वजन्म में जीव कहाँ-कहाँ हो सकता है और पुनर्जन्म में जीव कहाँ-कहाँ जा सकता है। हमारे एक गतागत का थोकड़ा है वह पूर्वजन्म-पुनर्जन्म की संहिता का ही थोकड़ा है।

भगवती सूत्र में मनुष्य जीवन के संदर्भ में पूर्वजन्म के नियमों के बारे में

प्रश्न किया गया है कि मनुष्य जो बनते हैं, वो पिछले जन्म में कहाँ थे, कहाँ से वे जन्म लेते हैं? उत्तर दिया गया कि मनुष्य चारों संसारी गति से जीव मनुष्य गति में आ सकता है। नारकीय जीवों में छठी नरक तक के जीव मनुष्य बन सकते हैं, सातवीं नरक वाला जीव तो सिर्फ तिर्यन्च गति में ही जाएगा। वो मनुष्य नहीं बन सकेगा।

देवगति के जीव पुनः न देवगति में पैदा हो सकता है, न नरक गति में। वह केवल मनुष्य या तिर्यन्च दो गति में ही जाएगा। इसी प्रकार नारकीय जीव भी पुनः न तत्काल नरक में जाते हैं, न देव गति में। वे भी मनुष्य या तिर्यन्च गति में ही पैदा होते हैं। धातव्य है कि देवगति और नरक गति में कुछ नियम एक समान है। जितना ज्यादा से ज्यादा आयुष्य देव गति का होता है, उतना ही ज्यादा से ज्यादा नरक गति का। न्यूनतम आयुष्य १०००० वर्ष का जितना देव गति में है, उतना ही नरक गति में।

भगवती सूत्र में गमा का थोकड़ा व तत्त्वज्ञान का एक खजाना सा भरा है। अनेक विषयों की तात्त्विक बातें हमें इस सूत्र में प्राप्त होती हैं। भगवती और पन्नवणा दोनों आगम तत्त्वज्ञान के मानो भंडार हैं। इनको आत्मसात करने वाला तत्त्ववेत्ता भी बन सकता है।

पूर्वजन्म तो अतीत हो गया। पूर्वजन्म का कईयों को ज्ञान हो सकता है। पूर्वजन्म का प्रभाव कुछ अंशों में वर्तमान जीवन पर भी हो सकता है। हमें तो आगे का ध्यान देना चाहिए। अतीत तो व्यतीत हो गया। आगे मैं दुर्गति में न चला जाऊँ। जब तक मोक्ष में न जाना हो तब तक इस नरक-तिर्यन्च गति में तो न जाना पड़े। उसके प्रति जागृत रहे। पुण्य का योग है, तो सब तरह से साता-अनुकूलता मिलती है। पर यह तो पिछली पूँजी है, आगे के लिए मैं क्या कर रहा हूँ, यह चिंतन करें। जीवन में धर्म की साधना करें। पापों से बचने का प्रयास करें, संयम-तप की साधना करें।

चारों गति से ऊपर एक सिद्ध गति-मोक्ष है, उसमें तो केवल मनुष्य ही जा सकता है और कोई गति का जीव नहीं जा सकता। हम पुनर्जन्म पर ध्यान दें तो अपुनर्जन्म पर भी ध्यान दें कि पुनर्जन्म हो ही नहीं। भव-भव में ज्यादा भ्रमण करना ही न पड़े। गृहस्थ भी बहुत विकास की स्थिति में आकर एकाभवतारी हो सकते हैं। श्रमणोपासक श्रावक को अवधिज्ञान भी हो सकता है।

जैन विश्व भारती के मंत्री सलील लोढ़ा ने जैविभा की प्रवृत्तियों की जानकारी दी। जैविभा साधना, सेवा, शोध का संगम है। आज जय तुलसी विद्या पुरस्कार

समारोह का आयोजन हुआ। २००४ में इस पुरस्कार की स्थापना हुई थी। सन् २०२३ का पुरस्कार श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी बाल विद्या विहार, चुरू को प्रदान किया गया। ट्रस्ट के ट्रस्टी विजय सिंह सेठिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पुरस्कार प्राप्तकर्ता का परिचय दिया गया। स्कूल ट्रस्ट के ट्रस्टी अशोक पारख ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि संस्कार युक्त शिक्षा हो। समय-समय पर जीवन विज्ञान-अणुप्रत के साथ जैन धर्म-तेरापंथ धर्मसंघ की भी शिक्षा देते रहें। विद्यालय व जैविभा खूब प्रगति करती रहे।

मुलुंड के जैन संघ के सदस्य पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में दर्शनार्थ पहुँचे हैं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### जो उपलब्ध है उसका त्याग करना सत्त्वा... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हम संस्था के अतीत को देखें तो संख्या उत्तरोत्तर विकास कर रही है। संसार से उन्मुख होने वाला मुमुक्षु वर्ग है। मुमुक्षु टेक्नोलॉजी के युग से निकलकर अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ रही है। जिज्ञासा, विभूषा और जिज्ञीर्षा से ये आगे बढ़ रही है। यहाँ आकर व्यक्ति निश्चिंतता का अनुभव करता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आत्मा का सुख समाधि है। इस समाधि को प्राप्त करने के चार उपाय हैं-विनय, श्रुत, तप और साधना। इसकी तुलना डिफेंस अकादमी से की जा सकती है। मुमुक्षु स्वयं अपनी आत्मा से लड़ती है। मुमुक्षुओं की संख्या वृद्धि होती रहे।

व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ (जो पा०शि० संस्था के मंत्री हैं) संस्थाध्यक्ष बजरंग जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुमुक्षु बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। समणी ऋजुप्रज्ञा जी, मुमुक्षु मानवी, मुमुक्षु भाविका ने गत पाँच वर्षों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। संस्था के पदाधिकारियों ने संस्था की पत्रिका 'अरुणिमा' पूज्यप्रवर को समर्पित की। डोक्यूमेंटरी द्वारा संस्था के विकास को बताया गया।

समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## जैनम जयति शासनम् कार्यक्रम का आयोजन

नंदनवन।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई द्वारा समस्त जैन समाज को एक माला के मोतियों से उपमित करने के सुंदर प्रयास हेतु समग्र जैन संप्रदाय की एकरूपता का प्रतीक जैनम जयति शासनम् कार्यक्रम की आयोजना हुई। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन धर्म की व्याख्या करते हुए जैन धर्म के सभी संप्रदायों को अभिन्न बताया। आचार्यप्रवर ने कहा कि बाईस तीर्थंकरों के समय चातुर्याम व पहले ऋषभ प्रभु व अंतिम भगवान महावीर के समय पाँच महाव्रत की अवधारणा थी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, कोषाध्यक्ष तरुण बोहरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए जैनम जयति शासनम् कार्यक्रम की जानकारी दी। महिला मंडल, चेम्बूर की बहनों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। तेमम की अध्यक्षा विमला कोठारी ने सभी का स्वागत किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कहा कि वर्तमान के संदर्भ में भगवान महावीर के सिद्धांतों का उल्लेख करते हैं

तो लगता है आज के युग में उनकी जरूरत है। अपरिग्रह महाव्रत मुनि जीवन के साथ जुड़ा है। परिग्रह के प्रति मूर्छा हो वही वास्तविक परिग्रह है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने सभी बहनों को जैन धर्म की एकता और अखंडता को सुरक्षित रखने के साथ भगवान महावीर के मूल सिद्धांतों के साथ बहनों को संयमित जीवन जीने के उपाय बताए। छोटे-छोटे व्रतों को जीवन में धारण कर हिंसा से बचा जा सकता है।

‘उड़ान ज्ञान गगन में’ की संयोजिका अलका मेहता ने नंदनवन में आयोजित शृंखलाबद्ध कार्यशालाओं की विस्तृत रिपोर्ट की जानकारी प्रेषित की व मुंबई महिला मंडल की कार्यसमिति बहनों के साथ ‘उड़ान ज्ञान गंगा में’ की रिपोर्ट की पुस्तक प्रतिलिपि साध्वीप्रमुखाश्रीजी को भेंट की। साथ ही मुंबई कन्या मंडल की संयोजिका काजल मादरेचा ने राइजिंग हाई-टच द स्काई के सत्रों की जानकारी दी।

जैनम जयति शासनम् कार्यक्रम के द्वितीय चरण में महिला मंडल, मुंबई द्वारा वर्ष २०२३-२५ की कार्यकारिणी की डायरेक्ट्री - परिचय प्रभा का विमोचन हुआ।

अभातेमम एवं मुंबई महिला मंडल

के गणमान्यजनों द्वारा चारों संप्रदाय के पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। जैनम जयति शासनम् कार्यक्रम के प्रायोजक कंकूदेवी इंदिरा एवं सीमा धाकड़ का मंडल की बहनों द्वारा स्वागत एवं सम्मान किया गया। डायरेक्ट्री के प्रायोजक सरला रणजीत लिंगा, अनिता नीलेश, चंडालिया, संगीता कोठारी, भाग्यवती सुरेश धींग, लक्ष्मीदेवी, वनिता मनोज सिंघवी, मनोहरदेवी गणपत डागलिया, कल्पना भेरूलाल परमार, अनिता मीना मेहता, देवीबाई मनीषा, वंदना, मुक्ता चपलोट का मंडल के गणमान्य सदस्यों द्वारा सम्मान किया गया। डायरेक्ट्री निर्माण में सुचिता कोठारी एवं भावना वागरेचा का विशेष श्रम एवं सहयोग रहा।

भगवान महावीर के सिद्धांतों पर विचारों के आदान-प्रदान हुए। मंत्री संगीता चपलोट ने संचालन किया। कार्यक्रम में लगभग २००० से अधिक बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में अभातेमम संरक्षिका प्रकाश देवी तातेड़, परामर्शक विमला नाहटा, कार्यसमिति सदस्य निर्मला चंडालिया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। रजिस्ट्रेशन काउंटर पर कादिवली, मीरा रोड, वसई, मलाड़, दहिसर क्षेत्रों का सहयोग रहा।

## साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के ३२वें दीक्षा दिवस पर वर्धापना गीत

● बहुश्रुत साध्वीकनकश्री ●

संघ क्षितिज पर मेघ धनुष यह नवरंगा उभरा है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का जीवन निखरा है। साध्वी समुदय हरा-हरा है, गीतों से मन भरा-भरा है।।

चंदेरी की कीर्ति कौमुदी, मोदी कुल की ज्योती, महाप्राण की जन्म धरा पर निपजा उजला मोती। लाडसती और कनकप्रभाजी, की अभिराम धरा है।। (तेरापथ की राजधानी वह सचमुच वसुंधरा है।।)

प्रतिभा और प्रबंधन पटुता की नैसर्गिक क्षमता, अनुशासन में भी अपनापन व्यवहारों में मृदुता। लहरों-सा उत्साही मानस, श्रुत वैभव गहरा है।।

ध्यान योग, स्वाध्याय योग का तपोयोग का संगम, साम्य योग है सधा हुआ, प्रेरक नियमित जीवन क्रम। अपने पर अपना अनुशासन का प्रतिपल पहरा है।।

योगीश्वर श्री महापन्न की कृपा अनन्या पाई, महाश्रमण ने दी साध्वीप्रमुखा पद की ऊँचाई। गुरु करुणा से युग अनुरूप मिली साध्वी प्रवरा है।।

स्वर्णिम हो हर प्रात आपका, रजतमयी हर रजनी, जीओ वर्ष हजारों, स्वस्थ रहो, दो कृतियाँ वजनी। वर्धापन करने नभ से कोई ज्योतिपुंज उतरा है।।

युगप्रधान की सन्निधि, नंदनवन की सुषमा न्यारी, अंतरंग परिषद की आभा है अतिशय मनहारी। परितः प्रतिभा पारिजात का पुण्यपुंज बिखरा है।।

लय : मांय न मांय न---

## मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा द्वारा तपस्विनी शानू मालू के मासखमण तपस्या करने पर शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी एवं साध्वी ललितकला जी के सान्निध्य में मासखमण तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। साध्वी शशिरेखा जी ने तप का महत्त्व बताते हुए कहा कि तपस्या मोक्ष प्राप्ति का एक साधन है। तपस्वी तप के द्वारा अपने पूर्व जन्मों के संचित कर्मों को काटता है। अपनी आत्मा को उज्वल बनाता है। साध्वी ललितकला जी ने कहा कि तपस्या करना बहुत कठिन है। उन्होंने तप शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि त से आशय तपना व प से आशय पकना है अर्थात् जो तप करके पकता है, वही लाभकारी है।

साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तपस्विनी बहन के पारिवारिकजन द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने किया। तेषुप के कोषाध्यक्ष महावीर बोधरा, महिला मंडल मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने तप अनुमोदना व्यक्त करते हुए अपना वक्तव्य दिया। सुमधुर गायिका कोमल पुगलिया ने तप की महिमा व्यक्त करते हुए गीतिका प्रस्तुत की। सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, जीवराज सामसुखा, पवन छाजेड़ व मदनलाल बोधरा ने तपस्विनी शानू मालू का जैन पताका, साहित्य व अभिनंदन पत्र से सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन रुचि छाजेड़ ने किया।

## जीवन के आधारभूत तत्त्व हैं-आत्मा और...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

योग पंद्रह प्रकार के बताए गए हैं। मन योग के चार वचन योग के चार और काय योग के सात प्रकार होते हैं। योग विकास का सूचक है। मनुष्यों के सभी योग हो सकते हैं। इसलिए हम दुनिया के सबसे विकसित प्राणी हैं। धातव्य यह कि हमारे मन और शरीर योग का हम उपयोग कैसा करते हैं।

योग एक उपलब्धि है। अपने आपमें योग न शुभ है, न अशुभ है। योग तो नामकर्म का उदय और अंतराय कर्म के विलय से निष्पन्न होने वाली चीज है। मोहनीय कर्म के उदय से योग अशुभ हो जाता है और मोहनीय कर्म के विलय से योग शुभ हो जाता है। आचार्य भिक्षु ने कहा है—उजला नै मैला कहया जोग, मोह कर्म संजोग-विजोग। पानी के तीन ग्लास के उदाहरण से समझाया।

पंद्रह योगों में शुभ-अशुभ दोनों आ जाते हैं। हम ध्यान दें कि हम योग के साथ मोह कर्म को जितना टाला जा सके दूर रखने का प्रयास करें। यह अध्यात्म की साधना हो जाती है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि शांत सहवास के लिए हमें वाणी पर नियंत्रण करना होगा। आवश्यक बात बोलें, वरना मौन रहें। अनावश्यक न बोलें। ऊँची भाषा बोलें। कटुतारहित भाषा बोलें। मीठी और मैत्रीपूर्ण भाषा बोलें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में दक्षिण कोलकाता ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव मनाया गया। जिसमें तेरापंथ महासभा के महामंत्री विनोद बैद, ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनलाल चौपड़ा, ज्ञानशाला राष्ट्रीय अध्यापक डालमचंद नवलखा व तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्यश्री भिक्षु थे। उन्हीं की परंपरा के नवम अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी हुए। जिन्होंने धर्मसंघ को ऊँचाई दी। आचार्य श्री तुलसी ने संघ को नए-नए आयाम दिए। उनमें एक महत्त्वपूर्ण आयाम है—ज्ञानशाला। ज्ञानशाला जीवन निर्माण की आधारशिला है। ज्ञानशाला उपहार व चारित्रशाला है। जीवन निर्माण में संस्कारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। सुसंस्कारों के जागरण से व्यक्ति का भाग्योदय होता है। बचपन बच्चों को संस्कारी बनाने का समय है। सद्संस्कारों से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। एक दृष्टि से ज्ञानशाला व्यक्तित्व विकास की प्रयोगशाला है।

इस अवसर पर तेरापंथ महासभा के महामंत्री विनोद बैद, ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक सोहनलाल चौपड़ा, ज्ञानशाला राष्ट्रीय अध्यापक डालमचंद नवलखा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया, डॉ० पुखराज जैन, वीणा सामसुखा, राजुल जैन, निधि बरड़िया आदि ने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के मंगल गीत से हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।



## महिला मंडल के विविध आयोजन



### द पावर ऑफ रीडिंग कार्यशाला का आयोजन नंदनवन, मुंबई।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि एवं साध्वीप्रमुखश्री विश्रुतुविभा जी की प्रेरणा से नंदनवन में 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता साध्वी वीरप्रभा जी ने कहा कि कम करनी होगी अपेक्षाएँ तो गम होगा कम। कैसे छोटी-छोटी चीजों से हम दुःख को आमंत्रित करते हैं। जिंदगी आइसक्रीम की तरह है पिघले उससे पहले एंजॉय करो। हम स्वयं जिम्मेदार हैं कभी खुशी कभी गम के लिए। 'द पावन ऑफ रीडिंग' जैसे जीवन के लिए खाना जरूरी है। पढ़ना एक ऐसी आतद है जो हमें बेहतर इंसान बना सकता है। पढ़ने से हमें ज्ञान और प्रेरणा मिलती है और जीवन में उच्च मार्ग प्रशस्त होते हैं। बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। उड़ान ज्ञान गंगा कार्यशाला की संयोजिका उपाध्यक्ष अल्का मेहता, विशेष सहयोगी अल्का पटावरी, वनीता बाफना, सीमा बाफना एवं ममता कोठारी, कर्तव्य बोध कार्यशाला की संयोजिका कोषाध्यक्ष सुनीता सुतरिया एवं वंदना चपलोट आदि बहनों का विशेष सहयोग रहा, उन्हें सम्मानित किया गया।

मंत्री संगीता चपलोट ने कार्यशाला का संचालन किया। मुंबई महिला मंडल की अध्यक्षा विमला कोठारी, पूर्वाध्यक्ष कार्यसमिति सदस्य, संयोजिकाएँ, सह-संयोजिकाएँ आदि बहनों की उपस्थिति रही।

### अमराईवाड़ी।

अभातेमम के तत्वावधान में तेमम, अमराईवाड़ी द्वारा द पावर शिल्पशाला के अंतर्गत 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका मंजु गेलड़ा ने नमस्कार महामंत्र से किया। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मुख्य वक्ता उपासिका मंजु गेलड़ा ने स्वाध्याय के पाँच प्रकारों के माध्यम से बताया कि नियमित रीडिंग करने से ज्ञानवृद्धि, तनावमुक्ति, सकारात्मक सोच को बढ़ावा आदि लाभ हैं, जिससे हमारा मन शांत रहता है। विशिष्ट अतिथि रेखा चिप्पड़ ने बताया कि बुक रीडिंग हमें हर बार कुछ नया सिखाती है। हमें प्रतिदिन कुछ न कुछ पढ़ने का संकल्प करना चाहिए। उपासिका सेजल मांडोत एवं मीनल कदमालिया ने भी द पावर ऑफ रीडिंग पर

अपनी भावनाएँ व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री वंदना पगारिया ने किया तथा आभार ज्ञापन श्रीया पगारिया ने किया। कार्यशाला में महिला मंडल व कन्या मंडल की बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

### मदुरै।

तेरापंथ भवन में महिला मंडल के तत्वावधान में अभातेमम के निर्देशानुसार 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ममता संकलेचा ने मंगलाचरण से किया। कार्यक्रम को मंगलमय बनाने के लिए महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत गाया। अध्यक्षा लता कोठारी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए सभी का स्वागत किया और अधिवेशन के बारे में सभी बहनों को अवगत करवाया और जानकारी दी।

'द पावन ऑफ रीडिंग' की कार्यशाला में डिंपल बागरेचा एवं ममता संकलेचा ने अच्छी तरह से सभी को समझाया की साहित्य बुक जैसा वफादार मित्र और कोई नहीं है। पुस्तकें हमें सही मार्गदर्शन प्राप्त कराती हैं। डिंपल बागरेचा ने बहनों से प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से समझाया कि स्वाध्याय का अर्थ क्या है। किताबें क्यों पढ़नी चाहिए और इससे क्या लाभ होता है। स्वाध्याय कितने और उसके प्रकार के बारे में बताया। सबको प्रेरणा और त्याग दिलाया कि दिन में कम से कम २० मिनट तक सबको स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। इससे अपनी स्मरण शक्ति एवं एकाग्रता बढ़ती है। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

### टिटलागढ़।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, टिटलागढ़ ने समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी एवं समणी आदर्शप्रज्ञा जी के सान्निध्य में 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा बबीता जैन ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल की नई सदस्य बहनों ने गीत के संगान के साथ कार्यक्रम का आरंभ किया। समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी ने कहा कि स्वाध्याय करने से हमारी सोच पॉजिटिव होती है तथा पढ़ते-पढ़ते एक क्षण ऐसा आता है हमारी जिंदगी बदल जाती है। स्वाध्याय करने से शक्ति मिलती है, अज्ञान का अंधेरा दूर होता है स्वाध्याय को अपने जीवन का अच्छा साथी बनाएँ।

समणी आदर्शप्रज्ञा जी ने कहा कि जीवन जहाँ है वहाँ संघर्ष है, साथी अच्छा तो सफर अच्छा होता है। स्वाध्याय को

अपना साथी बनाएँ तथा बच्चों में भी पढ़ने के संस्कार डालें। सोनाली जैन ने कहा कि पढ़ना हमारे दिमाग का व्यायाम है, अगर किताबों से अच्छी दोस्ती करोगे तो अपने को कामयाब इंसान बना पाओगे। केसिंगा बंगुमुंडा एवं बालंगीर के श्रावक-श्राविका भी शामिल हुए। लगभग १०० भाई-बहन कार्यशाला में उपस्थित थे।

### हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, हैदराबाद के तत्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में 'द पावर ऑफ रीडिंग' शिल्पशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी सुदर्शनप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ किया गया। मंडल की बहनों द्वारा मधुर स्वर में मंगलाचरण का संगान किया गया।

अध्यक्षा कविता आच्छा द्वारा शिल्पशाला में पधारी सभी बहनों का स्वागत व अभिनंदन किया गया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी व साध्वी राजुलप्रभा जी द्वारा विषय पर प्रकाश डाला गया। वर्षा बैद द्वारा मुख्य वक्ता का परिचय दिया गया। मुख्य वक्ता रुचि सेठिया ने सरल व अच्छे ढंग से जीवन में रीडिंग के महत्त्व को बताया। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन मंत्री सुशीला मोदी के द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन सुनीता बंबोली द्वारा व फोटोग्राफी मीनाक्षी सुराणा द्वारा की गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका प्रभा दुगड़, सुनीता बंबोली, सरिता नखत, कुसुम नाहटा व वर्षा बैद का विशेष सहयोग रहा। कार्यशाला में लगभग १०० श्रावक-श्राविकाएँ, कन्याएँ व किशोर उपस्थित थे।

### 'ललकार' नशामुक्ति अभियान का आयोजन गोरेगाँव (मुंबई)।

अभातेमम, तेमम, मुंबई के निर्देशन में तेरापंथ कन्या मंडल, गोरेगाँव 'ललकार' नशामुक्ति अभियान के तहत कन्या मंडल द्वारा नशा मुक्ति पर नुककड़ नाटक रेलवे स्टेशन के बाहर आयोजित किया गया।

तेरापंथ कन्या मंडल प्रभारी डिंपल के नेतृत्व में एवं सह-प्रभारी निकिता सिंघवी के मार्गदर्शन में, कन्या मंडल संयोजिका रेनी सिसोदिया, सह-संयोजिका प्रज्ञा सिंघवी, शिखा चंडालिया एवं सभा अध्यक्षा चतरलाल सिंघवी, मंत्री रमेश राठौड़, कन्या मंडल से सहप्रभारी पूनम परमार सहित अनेक

पदाधिकारीगण, सदस्यों की सहभागिता रही।

नमस्कार महामंत्र के पश्चात नशामुक्ति पर नुककड़ नाटक की प्रस्तुति की गई। जिसमें रैनी, प्रज्ञा, शिखा, नियति, प्रेक्षा, विधि, सिया, कशिश, भूमि, यशा, इशिका ने प्रस्तुति दी। तत्पश्चात कन्याओं द्वारा नशामुक्ति पर नुककड़ नाटक द्वारा प्रस्तुति दी गई।

इस अवसर पर उपस्थित अन्य समाज के लोगों ने नशामुक्ति होने का संकल्प ग्रहण किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तैयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं पूरे समाज में सारहनीय उपस्थिति एवं सहयोग रहा।

### जप अनुष्ठान का आयोजन

#### उधना।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, उधना द्वारा आयोजित कोटि जप अनुष्ठान सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित कोटि जप अनुष्ठान के साधकों एवं अन्य धर्मानुरागी भाई-बहनों को संबोधित करते हुए मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि कोटी जप अनुष्ठान का शुभारंभ मुनि सुमेरमलजी 'लाडनू' के सान्निध्य में कोलकाता में सन् १९६९ में हुआ। तब से लेकर अब तक प्रत्येक चातुर्मास के दौरान कोटी जप अनुष्ठान का सफलतापूर्वक आयोजन होता रहा है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि कोटी जप अनुष्ठान एक उत्कृष्ट साधना है। इसमें भाग लेने वाला व्यक्ति प्रतिदिन नवकार मंत्र की ११ माला गिनते हुए सवा लाख नवकार मंत्र का जाप कर लेता है। उधना में इस अनुष्ठान में २०६ भाई-बहनों ने जुड़कर कुल मिलाकर ढाई करोड़ नवकार मंत्र का अनुष्ठान किया है। मंत्र जप में अनोखी शक्ति होती है। उसमें भी नमस्कार महामंत्र का जाप तो विशेष महत्त्वपूर्ण होता है। तेमम के अध्यक्ष सोनू बाफना ने अनुष्ठान के संबंध में उपयोगी जानकारी दी एवं मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता की। मुनि अनंत कुमार जी एवं मुनि रम्य कुमार जी ने नवरात्रि अनुष्ठान करवाया। कार्यक्रम का संचालन तेमम, उधना के मंत्री नीलम डांगी ने किया।

### एकलठाणा व्रत का आयोजन

#### अमराईवाड़ी।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम द्वारा एकलठाणा का आयोजन नवरात्रि के शुभ

अवसर पर किया गया। उपासिका मंजु देवी गेलड़ा ने एकलठाणा के बारे में विस्तार से समझाया कि कैसे हमें एक ही स्थान पर स्थित बैठकर मौनपूर्वक ४८ मिनट के समय में आहार ग्रहण करना होता है और पूरे दिन तिविहार त्याग करके सूर्यास्त पश्चात चौविहार त्याग करना होता है।

अध्यक्षा लक्ष्मी सिसोदिया ने बताया कि अभातेमम के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सरिता डागा ने अपने नए सत्र का शुभारंभ एकलठाणा व्रत से किया है साथ ही उपासिका मंजु देवी गेलड़ा के प्रति इस व्रत को करने के लिए विशेष प्रेरणा देने एवं श्रम नियोजन हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। साथ ही पूरे तेरापंथ समाज के प्रति एकलठाणा में सहभागिता हेतु आभार व्यक्त किया। अमराईवाड़ी क्षेत्र से लगभग ११० सहभागियों ने व्रत में भाग लिया।

इस कार्यक्रम से सभी परिवार एवं समाज की सभी संस्था-सभा, महिला मंडल, तैयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के नन्हे बच्चों ने भी व्रत में पूर्ण सहयोग किया। तेरापंथ समाज के साथ-साथ सकल जैन समाज की महिला मंडल भी इस व्रत में जुड़े। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए महिला मंडल की सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी बहनों का विशेष श्रम लगा।

### 'व्यसन को करें इन्कार जीवन बने खुशहाल' विषय पर नाटिका का आयोजन टिटलागढ़।

अभातेमम के निर्देशानुसार 'व्यसन को करें इन्कार जीवन बने खुशहाल' विषय पर समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी तथा समणी आदर्शप्रज्ञा जी के सान्निध्य में टिटलागढ़ कन्या मंडल समाज को व्यसन से दूर रखने हेतु एक नाटक की प्रस्तुति द्वारा समाज को प्रेरणा देने का प्रयास किया गया।

समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी ने कहा कि अपने जीवन में अणुव्रत एवं योग को अपनाकर व्यसन एवं रोग से अपने आपको बचाएँ। समाज के श्रावक डॉ० घनश्याम ने भी बहुत विस्तार से 'योग या रोग : पसंद आपकी' विषय पर विस्तार से इसके फायदों से लोगों को अवगत कराया। महिला मंडल की अध्यक्षा बबीता जैन एवं उपाध्यक्षा भावना जैन ने कन्या मंडल को नाटक की तैयारी करवाई।

## स्वागत समारोह का आयोजन

### शालीमार बाग।

पीतमपुरा प्रवास संपन्न करके अवशिष्ट चातुर्मासिक प्रवास के लिए शासनश्री साध्वी रतनश्री जी शालीमार बाग गोयल भवन में पधारी।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि यद्यपि आपको चातुर्मास का समय कुछ कम मिला है, पर आप कम समय में अधिक काम करके दिखाएँ। त्याग और तपस्या की जोत जलाएँ, ज्ञान-ध्यान की सरिता में डुबकी लगाएँ। प्रत्येक दिन और प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करें। भविष्य की चिंता व्यथा से मुक्त होकर वर्तमान को समुज्ज्वल बनाएँ।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि हम महाश्रमण कंपनी के एजेंट बनकर यहाँ पर आए हैं। दीपावली और दशहरा का

सुअवसर आपको मिला है। दिल को विशाल बनाकर हमारा माल खरीदें कंजूसी न करें। आत्मिक संपदा से संपन्न बनें, हमने सुना है यहाँ पर बड़ी-बड़ी पार्टियाँ हैं तो हमारी बिक्री भी अच्छी होगी। साध्वी कार्तिकप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने महावीर अभिवंदना प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिका ने किया। शालीमार बाग तेरापंथ सभा अध्यक्ष सज्जन गिड़िया, तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, अणुव्रत न्यास से शांति कुमार जैन, अमित गोयल तेरापंथ सभा शालीमार बाग, कोषाध्यक्ष, पश्चिम विहार अध्यक्ष सुशील जैन, पालम द्वारिका तेरापंथ सभा अध्यक्ष ईश्वर जैन, पीतमपुरा सभा प्रवीण जैन, ज्ञानशाला दिल्ली के आंचलिक संयोजक विनोद जैन,

दिल्ली उपासक प्रभारी अशोक जैन, दिल्ली महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्ष मंजु जैन, पश्चिम दिल्ली अध्यक्ष तेममं रीटा चोरडिया उत्तर दिल्ली तेममं अध्यक्ष मधु आदि अनेक व्यक्तियों ने साध्वीश्री जी का स्वागत किया।

शालीमार बाग की बहनों ने गीत द्वारा साध्वीश्री जी का अभिनंदन किया। ज्ञानार्थी दिविज ने विचार व्यक्त किए। शालीमार बाग तेरापंथ सभा के मंत्री अनिरुद्ध जैन ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संयोजन पूनम उपासिका ने किया। शालीमार बाग की बहनों ने दस प्रत्याख्यानों का उपहार साध्वीश्री जी के चरणों में समर्पित किया। साध्वीश्री जी का मंगल प्रवेश विशाल जुलूस एवं जयघोषों के साथ हुआ।

## त्रिदिवसीय बाल संस्कार निर्माण आवासीय शिविर 'अरुणोदय' का आयोजन

### सिकंदराबाद।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में डी०वी० कॉलोनी तेरापंथ भवन में त्रिदिवसीय बाल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मंगलाचरण के रूप में बच्चों द्वारा ज्ञानशाला गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने भी गीत का संगान कर किया।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि बाल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन चातुर्मासकाल में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिससे कि हमारे संघ की नन्ही पौध को संस्कारों का सिंचन मिले। साध्वीश्री जी ने कहा कि ऐसे शिविरों के आयोजन का उद्देश्य है—भावी पीढ़ी सुयोग्य बने। उन्हें समीचीन मार्गदर्शन मिले, जीवन विकास के सूत्र मिलें। बीज बोते ही फल नहीं मिलता, सिंचन के प्रति भी जागरूकता रहनी चाहिए। तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में प्रशिक्षिकाएँ निःस्वार्थ भाव से धार्मिक संस्काररूपी अमूल्य विरासत को सहेजने में, निखारने में तन-मन से जुड़ी हैं। शिविर की सफल आयोजना में सबका श्रम सार्थक हुआ है। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि हमारे संघ की यह बाल पीढ़ी कीमती पूँजी है, इनकी सुरक्षा करना समाज और परिवार का परम दायित्व है। भविष्य में सभी को इस ओर ध्यान देना है, यह उपक्रम निरंतर आगे चलता रहे।

स्वागतीय वक्तव्य में क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा ने साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा व उनके कल्पनाशील विशिष्ट चिंतन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि पहली बार भाग्यनगर में बाल संस्कार निर्माण आवासीय शिविर आयोजित हुआ है। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने 'स्मॉल किड्स, बिग क्वेश्चन्स' के तहत नन्ही जिज्ञासाएँ शांत की। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी

ने ध्यान के प्रयोग, साध्वी सिद्धियशा जी ने आसन प्रणायाम, साध्वी राजुलप्रभा जी ने कायोत्सर्ग, 'प्रो विद जैन विजडम', साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने दृष्टांतों तथा कथानकों के द्वारा संस्कार प्रशिक्षण, साध्वी शौर्यप्रभा जी ने 'स्केल अप योर प्यूरिटिज विद कलर्स' आदि विषयों पर वक्तव्य दिए। जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय प्रशिक्षक राकेश खटेड़ ने जैन विज्ञान, हॉलिस्टिक एप्रोच, एक्सेल एवरीव्हेयर आदि विषयों पर, राजेश खटेड़ ने तत्त्वज्ञान पर विवज के माध्यम से, ट्रेनर रुचि सेठिया और सृष्टि जैन ने मनोरंजक गुप एक्टिविटीज़ के साथ कम्प्यूनिवेशन स्क्रिल पर, कोमल सेठिया ने बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट पर आर्ट, ग्रॉफोलोजिस्ट मोनिका खटेड़ ने हस्लेखन पर, इंदु कातरैला ने एरोबिक्स-जुम्बा पर सेशन लिया। किशोर मंडल ने लाफ्टर थैरेपी, बिग बॉस, ट्रेजर हंट करवाया।

समापन सत्र में शिविरार्थियों के द्वारा आभार स्वरूप गीत का संगान किया गया और भक्तामर स्तोत्र, पच्चीस बोल, २४ तीर्थकरों का उच्चारण द्वारा संक्षिप्त झलकियाँ प्रस्तुत कीं। संगीता गोलछा ने साध्वीश्री जी के चिंतन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि इस शिविर के

सफल आयोजन में साध्वीवृंद का श्रम के प्रति नतमस्तक हूँ। शिविर में लगभग ६२ प्रशिक्षिकाएँ, किशोर मंडल की टीम जुड़ी है। सभाध्यक्ष बाबूलाल बैद ने कहा कि हमने कल्पना नहीं की थी कि यह असाध्य कार्य सिद्ध हो गया, यह सुखद आश्चर्य के साथ प्रसन्नता का भी विषय है। समापन समारोह में बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत मंच पर आकर्षक प्रस्तुतियाँ दीं।

इस शिविर में लगभग २९३ शिविरार्थी, ६२ प्रशिक्षिकाएँ आदि का संपूर्ण टीमवर्क, आंचलिक संयोजक, तेरापंथ किशोर मंडल के कुशल भंसाली व टीम में सभी का श्रम और उत्साह परिलक्षित हुआ। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, सुशील संचेती, आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, आंचलिक सह-संयोजक सरोज लोढ़ा, क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा, सह-संयोजक यशोदा कोठारी, सरिता नखत, कविता आच्छा, ज्ञानशाला विभाग संयोजक सुनील बोहरा व तेरापंथ किशोर मंडल आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। सभी ट्रेनर्स का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। विविध सत्रों का संचालन साध्वी शौर्यप्रभा जी व डिंपल बैद ने किया। सरिता नखत ने आभार ज्ञापन किया।

## 'महाश्रमण के रंग-कला के संग' प्रतियोगिता का आयोजन

### हैदराबाद।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में 'महाश्रमण के रंग-कला के संग' प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन पर आधारित किसी भी दृश्य को, किसी भी कला के माध्यम से ए-३ साइज में बनाना था। तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में कई प्रविष्टियाँ आईं।

इस प्रतियोगिता की संयोजिका सुमन सेठिया एवं जूली बैद रही। निर्णायक के रूप में सुषमा राखेचा एवं हर्षलता दुधेडिया ने अपना निर्णय दिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान स्मृति नखत ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान प्रेम संचेती एवं तृतीय स्थान लक्ष्मीपत बैद ने प्राप्त किया। विजेताओं को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया।

## संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

### भूमि पूजन

#### अहमदाबाद।

वागड़ बे चौबीसी स्थानकवासी जैन वीसा श्रीमाली समाज अहमदाबाद के शिक्षा केंद्र (गर्ल्स व बॉयज हॉस्टल) एवं यांत्रिक भवन प्रोजेक्ट का खाद मुहूर्त जैन संस्कार विधि से जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षिक, उपासक प्राध्यापक एवं संस्कारक डालिमचंद नवलखा, अरविंद दोसी, अपूर्व मोदी एवं भुज से पधारे नवीन शाह द्वारा मंगलमय वातावरण में मंगल मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में वागड़ समाज के बे चौबीसी स्थानकवासी जैन श्रीमाली अध्यक्ष वसंतभाई खंडोल-भुज एवं महामंत्री महेशभाई मेहता, प्रोजेक्ट कन्वेनियर कीर्तिभाई संघवी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

### नूतन गृह प्रवेश

#### गंगाशहर।

देबु देवी धर्मपत्नी स्व० इंवरलाल भंसाली के पुत्र शांतिलाल-सुनील भंसाली के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, पवन छजेड़, विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में भंवरलाल डाकलिया, पांचीलाल जैन, राजेंद्र पारख, मोहनलाल भंसाली आदि परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

### पाणिग्रहण संस्कार

#### कोयंबटूर।

नोखा निवासी, कोयंबटूर प्रवासी लीलादेवी पूनमचंद मरोठी के सुपुत्र हिमांशु मरोठी का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी कडूर प्रवासी विमलचंद बोथरा की सुपुत्री सोनम बोथरा के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक निर्मल बेगवानी व दीपक कोठारी ने संपूर्ण विधि-विधान व मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं महावीर स्तुति के संगान से हुई।

तेयुप अध्यक्ष नीरज श्रीश्रीमाल ने शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। परिवार की ओर से पूनमचंद मरोठी एवं विमल बोथरा ने आभार व्यक्त किया।

#### अहमदाबाद।

ओमप्रकाश बाफना की सुपुत्री एवं चंदनमल बाफना के सुपौत्री लक्ष्मी का शुभ विवाह लक्ष्मीचंद कंकु चौपड़ा के सुपुत्र एवं स्व० धींगडमल कंकु चौपड़ा के सुपौत्र पुनीत के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अरुण बैद एवं आनंद बोथरा ने विधि-विधान एवं मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना ने शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। परिषद की ओर से बाफना परिवार एवं कंकु परिवार को मंगलभावना पत्रक के साथ सार्तिफिकेट की भेंट दी गई। वर-वधू के परिवारजनों ने परिषद एवं संस्कारों के प्रति आभार व्यक्त किया।

### नामकरण संस्कार

#### उदयपुर।

धनेश-बबीता बैद के सुपौत्र एवं कुणाल-भाविनी बैद के पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़, मनोज लोढ़ा, पंकज भंडारी ने विधिपूर्वक संपन्न करवाया। नमस्कार महामंत्र, परमेष्ठी वंदना, भगवान पार्श्वनाथ स्तुति, उपसर्गहर स्तोत्र, लोगस पाठ, भगवान महावीर स्तुति एवं विभिन्न मंत्रोच्चार के साथ नामकरण संस्कार किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप मंत्री भूपेश खिमेसरा ने जैन संस्कार विधि के बारे में बताया। तेयुप, उदयपुर द्वारा मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम में तेयुप उपाध्यक्ष अशोक चोरडिया, विनर्तमान अध्यक्ष अक्षय बडाला, अभातेयुप राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य अजित छजेड़, संदीप हिंगड सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।



## उपासना

(भाग - एक)

### □ आचार्य महाश्रमण □



#### ऋत भोजन

ऋत भोजन क्या है? इसका शाब्दिक अर्थ है सत्य भोजन। यानी ईमानदारी से, सचाई से अथवा श्रम से उपार्जित पैसे से प्राप्त होने वाला भोजन। बेईमानी से प्राप्त अन्न को अच्छा नहीं माना गया है। दूसरों का खून चूसकर जो व्यक्ति पैसा कमाता है, उसकी स्वयं की आत्मा तो भीतर से कचोटती ही है औरों की दृष्टि में भी वह अच्छा नहीं समझा जाता। कहा भी जाता है कि नीति का पैसा बरकत करता है। श्रावक के लिए आगम में एक विशेषण आता है—'धम्मणं चैव वित्तिं कप्पेमाणा'—धर्म से आजीविका चलाने वाला श्रावक होता है। गृहस्थ साधु की तरह अपरिग्रही नहीं बन सकता, माँग कर नहीं खा सकता, किंतु अर्जन के साथ साधनशुद्धि का विचार जुड़ना चाहिए। साधनशुद्धि से उपार्जित वैभव से आजीविका चलाने वाला व्यक्ति शांति और सम्मान का जीवन जीता है। इस प्रकार मित भोजन, हित भोजन और ऋत भोजन—ये तीन सूत्र भोजन के साथ जुड़ जाएँ तो शारीरिक, मानसिक और भावात्मक स्वस्थता बनी रहेगी।

### वाणी-संयम

आराधना का एक त्रिकोण है—मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति। जो साधना करना चाहता है, उसे इस त्रिकोण की आराधना करनी होती है। इनमें से किसी को छोड़कर साधना नहीं की जा सकती। मन, वाणी और शरीर—इनमें से किसी को नहीं साधा तो आराधना नहीं हो सकती। मन की एकाग्रता के लिए भी शरीर और वाणी को साधना अपेक्षित है। भाषा बाह्य जगत् और अंतर्जगत् का सेतु है। यदि वाणी नहीं होती तो प्रत्येक व्यक्ति अंतर्जगत् में रहता, वह कभी बाह्य जगत् से संपृक्त नहीं होता। संपर्क का शक्तिशाली माध्यम है—भाषा।

साधना का सूत्र है वाक् संयम और संपर्क का सूत्र है भाषा का प्रयोग।

#### निश्चित नयः व्यवहार नय

भगवान् महावीर ने सचाई को जानने के लिए दो नयों का प्रतिपादन किया—व्यवहार नय और निश्चय नय। यदि स्थूल बात को पकड़ना है तो व्यवहार नय को काम में लो। यदि वास्तविकता तक पहुँचना है तो निश्चय नय का प्रयोग करो। वाक् संयम का स्थूल पक्ष क्या है और वास्तविक पक्ष क्या है? निश्चय नय का पहला सूत्र है—मत बोलो, मौन रहो। प्रश्न हुआ—न बोलने से काम नहीं चलेगा। तब कहा गया, समाधान हो उतना बोलो। व्यवहार नय का सूत्र इससे विपरीत होगा। उसका सूत्र है—बोलो। समस्या प्रस्तुत हुई—यदि व्यक्ति बोलता रहेगा तो मस्तिष्क विगड़ जाएगा, शक्ति क्षीण होगी। यदि व्यक्ति सारे दिन बोलता चला जाए तो काम नहीं चलेगा। कहा गया—आवश्यकता से अधिक मत बोलो। निश्चय नय का दूसरा सूत्र है—जितना आवश्यक है, उतना बोलो। व्यवहार नय का दूसरा सूत्र है—अनावश्यक मत बोलो। ये दोनों अवधारणाएँ भिन्न हैं।

#### किससे बोलूँ

जो व्यक्ति अध्यात्म की साधना करेगा, उसकी गहराई में जाएगा, उसके मन में प्रश्न होगा—केन ब्रवीम्यहं—मैं किससे बोलूँ, क्यों बोलूँ? मैं जिससे बोलता हूँ, वह मुझे नहीं जानता और जो मुझसे बोलता है, मैं उसे नहीं जानता। मैं अनजान व्यक्ति के साथ क्या बोलूँगा? यदि मुझे कोई जानता है तो मैं उसके साथ बात करूँ। जो जानता है, वह बोलता नहीं और जो बोलता है, वह जानता नहीं।

अध्यात्म जगत् में बोलने का अवकाश ही नहीं है। पहुँचे हुए संत मिले, घंटों तक आमने-सामने बैठे रहे और फिर उठकर अपने-अपने स्थान पर चले गए। शिष्यों ने गुरु से कहा—हमने सोचा था, आज दो महान् संत मिले हैं, कुछ अच्छी चर्चा सुनने को मिलेगी। आपने तो कोई बात नहीं की। संत ने मुस्कराते हुए कहा—जो मैंने कहा, वह उसने समझ लिया। जो उसने कहा, वह मैंने समझ लिया। बोलने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

बोलने की अपेक्षा व्यवहार जगत् में होती है। जहाँ स्थूल जगत् की यात्रा है वहाँ भाषा की उपयोगिता है। जहाँ आत्मा से आत्मा का मिलन होता है, वहाँ भाषा मौन हो जाती है। जहाँ बाहर से बाहर का मिलन होता है, वहाँ भाषा मुखर बन जाती है।

#### अपेक्षित है वाक् संयम

हम न बोलें, इस पर एकांततः बल नहीं दिया जा सकता। किंतु वाक् संयम का अभ्यास करें, यह अवश्य अपेक्षित है। एक गृहस्थ के लिए बिलकुल मौन रहना संभव नहीं है और एक मुनि के लिए भी यह संभव नहीं होता। भगवान् महावीर ने बारह वर्ष साधना की, प्रायः मौन रहे। कैवल्य उपलब्धि के पश्चात् बहुत प्रवचन किए। बुद्ध ने भी यही किया। जितने महापुरुष हुए हैं, उन्होंने मौन की साधना भी की और वाणी का प्रयोग भी किया। निरंतर मौन रहना यह न हमारा पक्ष है, न स्थापना है और न हम उसकी उपयोगिता को मानते हैं। जिस व्यक्ति को केवल हिमालय की गुफा में बैठना है, केवल एकांत का जीवन जीना है, हो सकता है कि वह न बोले। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हिमालय की गुफा में बैठने वाला मौन रहता है। वह वाणी का स्पष्ट उच्चारण न करे किंतु सोचे, स्मृति या कल्पना करे तो वह भी बोलना है। भाषा का जो विकास हुआ है, उसे हम कैसे रोक पाएँगे?

#### सम्यक् प्रयोग

केवल मौन, न बोलना सामाजिक विकास के लिए ही नहीं, आत्मिक विकास के लिए भी बहुत सहायक नहीं बनता। प्रश्न हो सकता है—क्या हम बोलते ही चले जाएँ? यह भी अच्छा नहीं है। यदि हम निरंतर बोलेंगे तो मिथ्यावचन से बच नहीं पाएँगे। न मौन और न निरंतर भाषण। हमारे लिए करणीय कार्य है वाणी का समय। बोलना भी है और उसका संयम भी करना है। न एकांत मौन और न एकांत वाचालता। मध्यम मार्ग है वाक् संयम।

वाणी का संयम वह है, जिसमें वाणी का सम्यक् प्रयोग हो, मिथ्या प्रयोग न हो। वाणी का सम्यक् प्रयोग वह है, जिसमें बोलने के साथ क्रोध न हो। जो वचन निकल रहा है, वह क्रोध से लिपटा हुआ है तो वाणी का सम्यक् प्रयोग नहीं है जो वचन निकले, वह माया से आवृत्त न हो, मान से भरा हुआ न हो, लोभ से जुड़ा हुआ न हो। क्रोध-मिश्रित, माया-मिश्रित और लोभ-मिश्रित न हो। जो इन कषायों से मुक्त वचन है, वह वाणी का सम्यक् प्रयोग है।

#### मौन ही सार्थक है

व्यक्ति एक घंटा मौन का संकल्प लेता है। एक घंटा नहीं बोलना है, यह लक्ष्य होता है। लक्ष्य यह होना चाहिए—वाक् संयम की साधना करनी है। व्यक्ति यह संकल्प करे—एक घंटा वाणी का संयम करूँ। जब भी बोलने का प्रसंग आए, क्रोध, मान, माया और लोभ रहित वचन का प्रयोग करूँ। व्यक्ति एक घंटा मौन रहा। जब मौन खुले तब मिथ्या-वाणी का प्रयोग करे तो पाँच मिनट में ही मौन की कसर निकल जाती है। केवल एक घंटा, दो घंटा न बोलना ही मौन नहीं है। मौन वह है, जिससे वाक् संयम की प्रेरणा मिले, वाणी के सम्यक् प्रयोग की चेतना जागे। मौन वही सार्थक है, जो संयम से अनुप्राणित है।

#### ऐसा मौन न करें

प्राचीन समय की घटना है। साधुओं की जमात गाँव के बाहर ठहरी। कुछ साधु गाँव में गए। ग्रामवासियों ने साधुओं का अभिवादन किया। साधु बोले—हम गाँव के बाहर ठहरे हैं। हमारे भोजन की व्यवस्था करनी है। लोगों ने विनम्रतापूर्वक कहा—महाराज! व्यवस्था कर रहे हैं। एक घंटा बीत गया। साधु पुनः गाँव में आए। लोगों से पूछा—क्या व्यवस्था हो गई?

‘महाराज! अभी नहीं हुई, समय लगेगा।’

‘अभी समय लगेगा?’

‘हाँ महाराज! गाँव का काम है। सब पंच मिलते हैं, निर्णय करते हैं फिर व्यवस्था होती है। इसमें समय तो लगता है।’

दो घंटा बीत गए। व्यवस्था नहीं हो पाई। साधु रोष से भर उठे। गाँव में आए और छप्परों को तोड़ना शुरू कर दिया। लोग घबराए स्वर में बोले—‘महाराज! आप यह क्या कर रहे हैं? हम व्यवस्था कर रहे हैं और आप छप्पर तोड़ रहे हैं? क्या आपने गुरुजी से पूछ लिया?’

‘हाँ! पूछ लिया।’

‘गुरुजी ने क्या कहा?’

‘कहा तो कुछ नहीं।’

‘फिर आप कैसे तोड़ रहे हैं?’

‘गुरुजी के मौन है। हमने कहा—हम छप्पर तोड़ रहे हैं तब गुरुजी ने ‘हूँ’ कहकर स्वीकृति दे दी।’

लोग यह सुनकर स्तब्ध रह गए। एक व्यक्ति बोल उठा—

**मुनि मौन फारसी भणे, हुंकारै खट काया हणौ।**

**अणबोल्या ही उद्धम करै, बोल्या तो कै जुलम करै।।**

#### प्रियकर : हितकर

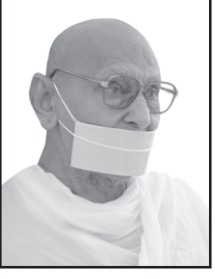
हम ऐसा मौन न करें। एक घंटा का भी मौन करें तो ऐसा करें, जिसमें मन और वचन का संयम हो। मौन के समय शांत रहें और यह संकल्प करें—भविष्य में कटु वचन नहीं बोलूँगा, अप्रिय और अहितकर वचन नहीं बोलूँगा। कहा गया—

**‘सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।’**

सत्य बोलो, प्रिय बोलो। इसके स्थान पर यह कहना अधिक संगत प्रतीत होता है—सत्य बोलो, हितकर बोलो। एक बात प्रिय है किंतु हितकर नहीं है तो वह प्रिय भी काम की नहीं है। अनेक व्यक्ति बहुत मीठी, चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं। उससे हित नहीं सधता किंतु व्यक्ति भुलावे में पड़ जाता है। वह प्रिय होते हुए भी हितकर नहीं है। सबसे पहले व्यक्ति यह सोचे कि मैं जो कह रहा हूँ, वह हितकर है या नहीं? यह संभव है कि जो हितकर है, वह प्रिय न लगे। हितकर बात सबको प्रिय लगे, यह आवश्यक भी नहीं है। हित की बात बहुत बार अप्रिय लग सकती है।

एक माँ अपने पुत्र से कहती है—तुम ज्यादा मिठाई मत खाओ। इतनी टॉफियाँ मत खाओ। क्या यह बात बच्चे को प्रिय लगती है? यह बात प्रिय नहीं, किंतु हितकर है। जो हितकर होता है, उसका परिणाम अच्छा होता है। जो प्रियकर होता है उसका परिणाम अच्छा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।

(क्रमशः)



## संबोधि

### □ आचार्य महाप्रज्ञ □

#### बंध-मोक्षवाद

#### ज्ञेय-हेय-उपादेय

#### भगवान् प्राह

(पिछला शेष)

स्वाध्याय का तीसरा लाभ—

सत्य की दिशा में अनुगमन करना। 'अनुप्रेक्षा' उसका माध्यम है। शब्द और अर्थ की अनुप्रेक्षा करता हुआ व्यक्ति अंतिम गहराई में प्रवेश कर पदार्थ का सत्यबोध कर स्वयं में प्रविष्ट हो जाता है।

उस स्वाध्याय के मौलिक स्वरूप का दर्शन करें, जो कि हमारे जीवन को आमूल-चूल बदलने में सक्षम है। वही यथार्थ तप है। स्वाध्याय का अर्थ है—स्व-आत्मा का अध्ययन करना, आत्मा को पढ़ना। दूसरों को पढ़ना सरल है, स्वयं को पढ़ना नहीं। इसलिए इसे तप कहा है। दूसरे के अध्ययन में व्यक्ति जितना व्यग्र है उतना स्वयं के अध्ययन में उत्सुक नहीं है। दृष्टि का दूसरों पर अवलंबित होना धर्म नहीं, धर्म है स्वयं को देखना। स्वदर्शन जो सहज है, वह आज के मानव के लिए असहज हो गया। इसलिए आज स्वाध्याय तप की जितनी उपेक्षा है, पहले उतनी नहीं रही। बड़े-बड़े तपस्वियों के लिए यह तप दुर्धर्ष है। धर्म का जीवंत-रूप इसके बिना संभव नहीं है।

#### सही स्वाध्याय

स्वाध्याय का पहला चरण होगा कि हम अपने आमने-सामने खड़े होकर अपने को पढ़ें। दूसरों की धारणाओं को हटा दें। दूसरे लोग आपके संबंध में क्या कहते हैं—इस ओर पीठ कर दें। लोगों की अपनी-अपनी दृष्टि होती है, और अपने-अपने बटखरे होते हैं, और अपने-अपने माप होते हैं। आप उनकी चिंता करेंगे तो अपने असली चेहरे को कभी प्रगट नहीं कर सकेंगे। आपको अपना चेहरा उनके साँचे में ढालना होगा। इससे आपकी आत्मा मर जाएगी और आप संभवतया सर्वत्र सफल भी नहीं हो सकेंगे। इसलिए आप दूसरों से हटकर अपने में आएँ और देखें—बड़ी ईमानदारी से कि आप कैसे हैं? आपके भीतर क्या है? जो है—उससे डरें नहीं, देखते जाएँ।

दूसरे चरण में—आप अकेले बैठें और सहजतापूर्वक अपनी वृत्तियों का दर्शन करते जाएँ। एक-एक को प्रकट होने दें। जो हैं उन्हें अस्वीकार कैसे करेंगे? कैसे उनसे अपरिचित रहेंगे? यहाँ बहुत सावधानता, निर्भयता और धैर्य की अपेक्षा होगी। काम, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, वासना आदि प्रवृत्तियाँ आपमें पहले भी विद्यमान थीं, किंतु उनका दर्शन नहीं था, अब आप उनको देख रहे हैं और उनको प्रकाश में ला रहे हैं। इसके साथ-साथ आज तक का जो आपका विकृत रूप था उसे आप स्वीकार भी करते जाएँ, लेकिन एक बात का और ध्यान रखें कि आप ऐसे नहीं हैं। आपके भीतर एक विराट् शुद्धरूप और छिपा है। ये सब आपकी प्रमत्तता के कारण प्रविष्ट हो गए थे। आप ये नहीं हैं। जैसे-जैसे आप अपने को जानने लगेंगे तो आपमें बदलाहट होनी शुरू हो जाएगी। अपने को जानना और स्वीकार करना इस वृत्ति से छूटने का अमोघ उपाय है। महावीर की भाषा में यह सम्यग्-ज्ञान है। सम्यग् ज्ञान की स्थिति में अन्यथा होना अशक्य है। ज्ञान शक्ति है। स्वाध्याय की साधना का यही मुख्य लक्ष्य है।

#### (३३) एकाग्रचिन्तनं योगनिरोधो ध्यानमुच्यते।

धर्म्यं चतुर्विधं तत्र, शुक्लं चापि चतुर्विधम्॥

एकाग्र चिंतन एवं मन, वचन और काया के निरोध को ध्यान कहते हैं। धर्म्यध्यान के चार प्रकार हैं और शुक्लध्यान के भी चार प्रकार हैं।

#### (३४) अर्हता देशितां दृष्टिं, आलम्ब्य क्रियते यदा। पदार्थचिन्तनं यत्तत्, आज्ञाविचय उच्यते॥

अर्हत् के द्वारा उपदिष्ट दृष्टि—अतीन्द्रिय विषयों को आलंबन बना कर जो पदार्थ का एकाग्र चिंतन किया जाता है, वह आज्ञा विचय है। यह धर्म्यध्यान का पहला प्रकार है।

#### (३५) सर्वेषामपि दुःखानां, रागद्वेषौ निबंधनम्। ईदृशं चिन्तनं यत्तत्, अपायविचयो भवेत्॥

राग और द्वेष सब दुःखों के कारण हैं—इस प्रकार का जो एकाग्र चिंतन किया जाता है, वह अपायविचय है। यह धर्म्यध्यान का दूसरा प्रकार है।

#### (३६) सुखान्यपि च दुःखानि, विपाकः कृतकर्मणाम्। किं फलं कस्य चिन्तेति, विपाकविचयो भवेत्॥

सुख और दुःख कर्मों के विपाक—फल हैं। किस कर्म का क्या फल है, इस प्रकार का जो एकाग्र चिंतन किया जाता है, वह विपाक-विचय है। यह धर्म्यध्यान का तीसरा प्रकार है।

#### (३७) लोकाकृतेश्च तद्वर्तिभावानां आकृतेस्तथा। चिन्तनं क्रियते यत्तत्, संस्थानविचयो भवेत्॥

ध्यान का अर्थ है—चिंतनीय विषय में मन को एकाग्र करना, एक विषय पर मन को स्थिर करना, अथवा मन, वचन और काया की प्रवृत्तियों का निरोध करना (देखें—आठवें श्लोक की व्याख्या)। ध्याता ध्यान के द्वारा अपने ध्येय को प्राप्त करने का प्रयास करता है और उसमें सफल भी होता है। ध्येय की इष्टता व अनिष्टता के आधार पर ध्यान भी इष्ट व अनिष्ट बन जाता है। सामान्यतः ध्येय अपरिमित है। जितने मनुष्य हैं, उन सबकी एकाग्रता भिन्न-भिन्न होती है। उनका प्रतिपादन करना असंभव है। संक्षेप में उसके चार प्रकार किए गए हैं। अनात्माभिमुखी जितनी एकाग्रता है। वह सब आर्त व रौद्र ध्यान है। आत्माभिमुखी जितनी एकाग्रता है, वह सब धर्म व शुक्ल ध्यान है।

आर्त और रौद्र ध्यान संसार के कारण हैं, अतः हेय हैं। धर्म और शुक्लध्यान मोक्ष के कारण हैं, अतः उपादेय हैं।

#### (३८) उन्मादो न भवेद् बुद्धेः, अर्हद्वचनचिन्तनात्। अपायचिन्तनं कृत्वा, जनो दोषाद् विमुच्यते॥

अर्हत् की वाणी के एकाग्र चिंतन से बुद्धि का उन्माद अथवा अहंकार नहीं होता, यह आज्ञाविचय का फल है। राग और द्वेष के परिणाम का एकाग्र चिंतन करने से मनुष्य दोष से मुक्त बनता है, यह अपायविचय का फल है।

अयथार्थता में दोषों का परिपालन और उद्भव होता है। जब मनुष्य सत्य को निकट से देख लेता है तब सहसा असत्य के पैर लड़खड़ा जाते हैं। आत्म-हितैषी व्यक्ति फिर अहित का अनुसरण नहीं करता। आज्ञाविचय आदि ध्यानों में रमण करने वाला यथार्थ का स्पर्श कर लेता है। उसकी मति-मूढ़ता सहज ही नष्ट हो जाती है। वह क्रमशः मुक्ति की ओर अग्रसर होता रहता है।

(क्रमशः)

## अवबोध

### □ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' □

#### कर्म बोध

#### बंध व विविध

प्रश्न २२ : शुभ कर्म को कैसे तोड़ा जा सकता है?

उत्तर : शुभ कर्म को तोड़ने का वैसे कोई प्रशस्त साधन नहीं है। केवली समुद्घात के समय ही शुभ कर्म तोड़े जाते हैं। यदि पुण्य भोगने में आसक्ति नहीं रहती, तो पुण्य भोगने में पाप का बंध नहीं होता। अशुभ प्रवृत्ति से पुण्य का क्षय तीव्रता से होता है, पर उसी के साथ पाप का बंध भी उतनी ही तीव्रता से होता है, अतः आत्मा हल्की नहीं हो पाती।

प्रश्न २३ : मात्र छह आवलिका स्थिति वाले दूसरे गुणस्थान में आयुष्य का बंध हो सकता है, पर अंतर्मुहूर्त्त स्थिति वाले तीसरे गुणस्थान में नहीं हो सकता, यह क्यों?

उत्तर : प्रतिपाती सम्यक्वी जीव दूसरे गुणस्थान का स्पर्श करता है। उसका गिरना नियति है। यह

कोई अनिश्चय की स्थिति नहीं है। तीसरे गुणस्थान में संशय की स्थिति रहती है। आयुष्य का निर्धारण स्वयं में एक निश्चय है। यह अनिश्चय व संशय की स्थिति में नहीं होता, इसलिए तीसरे गुणस्थान में आयुष्य का बंध नहीं होता।

प्रश्न २४ : क्या छद्मस्थ अकषायी होता है?

उत्तर : छद्मस्थ सकषायी व अकषायी दोनों होते हैं। पहले से दसवें गुणस्थान तक जीव सकषायी छद्मस्थ व ग्यारहवें, बारहवें गुणस्थान में अकषायी छद्मस्थ होता है।

प्रश्न २५ : वीतराग कौन होता है?

उत्तर : जिसने राग व द्वेष को जीत लिया है वह वीतराग होता है। वीतराग में अंतिम चार गुणस्थान होते हैं। अकषायी, वीतराग पर्यायवाची शब्द हैं। ग्यारहवें, बारहवें गुणस्थान में छद्मस्थ वीतराग व तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में केवली वीतराग होते हैं।

(क्रमशः)



## दीक्षार्थी धनराज बैद के मंगलभावना समारोह के आयोजन

### मालवीय नगर, जयपुर

शासनश्री साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी धनराज बैद का मंगलभावना कार्यक्रम हुआ। साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि धनराज बैद गुरुदेव श्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञा जी की कल्पना के प्रतीक-आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व के उदाहरण हैं। इनकी निर्मलता, सहजता, विनम्रता और संघनिष्ठा प्रशंसनीय है। आधुनिक युग में इस प्रकार साधना करना इनकी गहरी अध्यात्म निष्ठा का परिचायक है। मैंने अपने चार वर्ष के दिल्ली प्रवास में इनकी साधना और जीवन-चर्या के प्रयोगों को निकटता से देखा, जो विशेष प्रेरक लगे। धनराज से धर्मराज बनने जा रहे दीक्षार्थी के प्रति हार्दिक मंगलकामना करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा— करुणानिधान गुरुदेव ने महती कृपा कर आपको आध्यात्मिक उन्नयन का महान अवसर प्रदान किया है। उसे शतगुणित फलित करें।

दीक्षार्थी धनराज बैद ने कहा कि उत्तराख्ययन सूत्र के स्वाध्याय से मुझमें वैराग्य के बीज अंकुरित हुए। वहाँ बताया गया है कि श्रावक जीवन में मासखमण भी कर लें तो भी वह चारित्र्य धर्म की 96वीं कला में भी नहीं आता। उन्होंने कहा—आत्मा में अनंत शक्ति है। गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से और उनकी कृपा से सब कुछ संभव हो सकता है। साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता के स्वरो में कहा—आपका मार्गदर्शन मेरी साधना में बहुत उपयोगी रहा, मैं जन्मों तक आपका ऋणी रहूँगा।

साध्वीश्री जी द्वारा नवरचित भावपूर्ण गीत का संगान साध्वी मधुलता जी आदि साध्वियों ने किया। समणी जयंतप्रज्ञा जी व समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने गीतिका द्वारा अपनी मंगलकामना व्यक्त की।

अणुगत विश्व भारती सोसायटी के

अध्यक्ष अविनाश नाहर, जय तुलसी फाउंडेशन के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, तेरापंथी सभा अध्यक्ष हिममत डोसी, महिला मंडल, जयपुर शहर अध्यक्ष नीतू मेहता, तेयुप जयपुर अध्यक्ष अमित छल्लाणी, युवा गौरव राजेंद्र सेठिया आदि ने दीक्षार्थी की संयम अनुमोदना में अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका द्वारा बधाई दी। मंच का संचालन सुरेश बरड़िया ने किया।

### गंगाशहर

मुमुक्षु धनराज बैद के गंगाशहर पधारने पर तेरापंथी सभा द्वारा उनके आगामी संयम जीवन की मंगलकामना हेतु अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। ७७ वर्षीय धनराज बैद, राजलदेसर निवासी और दिल्ली प्रवासी हैं। आपका जीवन साधनामय है तथा भरापूरा परिवार त्यागकर वैराग्य पथ स्वीकार कर रहे हैं। अभिनंदन समारोह में शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि भगवान महावीर ने कहा कि आत्मा शाश्वत है। धनराज शाश्वत की प्राप्ति के लिए अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जब व्यक्ति का लक्ष्य अटल हो तो गुरु कृपा भी प्राप्त हो जाती है। धनराज बैद प्रतिमाधारी श्रावक हैं। इस उम्र में संयमरत्न प्राप्त करने में पारिवारिक जनों में उनकी धर्मपत्नी, पुत्र, पुत्र वधू, पोते-पोती सभी का योगदान है।

साध्वी ललितकला जी ने कहा कि साधुत्व स्वीकार करना बहुत दुर्लभ बात है। आत्मा का सार निकालने के लिए साधुत्व ग्रहण कर रहे हैं। आपका जीवन त्यागमय है। सभी सुख-सुविधा त्यागकर संयम पथ स्वीकार कर रहे हैं। मुमुक्षु बैद ने अपने वक्तव्य में कहा कि बचपन के संस्कार आगे बहुत काम आते हैं। मुझे बचपन से ही धर्मसंघ के संस्कार प्राप्त हुए हैं। अनेक साधु-संतों

की प्रेरणा प्राप्त हुई।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेमम अध्यक्ष सांजू लालानी व तेयुप के उपाध्यक्ष ललित राखेचा ने उनके संयम जीवन के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, सहमंत्री पवन छाजेड, महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालानी, तेयुप उपाध्यक्ष ललित राखेचा, मंत्री भरत गोलछा, वरिष्ठ श्रावक जीवराज सामसुखा ने धनराज बैद को जैन पताका व साहित्य से सम्मानित किया।

### सिवानी

तेरापंथ भवन, सिवानी में बैरागी धनराज बैद का मंगलभावना समारोह शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आपका जीवन साधनामय है तथा भरा-पूरा परिवार त्याग कर संयम पथ स्वीकार कर रहे हैं। जब व्यक्ति का लक्ष्य अटल हो तो गुरु कृपा भी प्राप्त हो सकती है। धनराज बैद प्रतिमाधारी श्रावक हैं। इस उम्र में संयम रत्न प्राप्त करने में पारिवारिकजनों में उनकी धर्मपत्नी, पुत्र, पुत्रपधू, पोते-पोती सभी का योगदान है।

साधुत्व स्वीकार करना बहुत दुर्लभ बात है। आत्मा का सार निकालने के लिए साधुत्व ग्रहण कर रहे हैं। आपका जीवन त्यागमय है और उनके संयम जीवन को मंगलकामना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम में साध्वी सुमंगलाश्री जी, साध्वी सुलभयशा जी व साध्वी संबोधयशा जी एवं सभाध्यक्ष रतनलाल उपस्थित रहे।

## तप अनुष्ठान का आयोजन

चेन्नई।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में नवरात्रि अनुष्ठान के अंतर्गत तपोनुष्ठान तप निरंतन चल रहा है। तेरापंथ सभा और महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में साध्वी लावण्यश्री जी के आशीर्वाद से एकासन तप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग ६० भाई-बहनों ने एकासन तप का लाभ लिया और अनगिनत भाई-बहनों ने एकासन का लाभ अपने घर में भी लिया।

एकासन तप अनुष्ठान के लिए सभा से संयोजक चंद्रेश चिप्पड़, मनोज गादिया, महिला मंडल से संयोजिका रेखा गादिया एवं संगीता नाहर का विशेष सहयोग रहा। एकासन अनुष्ठान की व्यवस्था के लिए तेरापंथ सभा के अध्यक्ष उगमचंद सांड, मंत्री अशोक खतंग, महिला मंडल से अध्यक्षा लता पारख, मंत्री हेमलता नाहर एवं पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

## साध्वी पावनप्रज्ञा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

### अनशन की ज्योति से जीवन ज्योतिर्मय हुआ

#### ● साध्वी कलाप्रभा ●

अनशन की ज्योति से जीवन ज्योतिर्मय हुआ। नश्वर तन है नश्वर धन है नश्वरता का बोध हुआ।।

पति वियोग की दुःखमय घड़ियों में वैराग्य का अंकुर प्रस्फुटित हुआ। मिली प्रेरणा भगिनी अक्षयप्रज्ञा से मोहमाया का बंधन तोड़ दिया।।

सुख वैभव में पत्नी-पुसी, भौतिक सुख-सुविधाओं से मन को मोड़ दिया। संयम के पथ पर हर्षित मन का कदम, बढ़ा दिया।।

हेम शताब्दी पर गुरुवर महाप्रज्ञ से समणी दीक्षा का वरदान मिला। दिल का कण - कण पुलकित प्रमुदित हुआ।।

गुरुवर ने पावनप्रज्ञा नाम दिया समणी बल जीवन का उत्थान किया। व्यवहार कुशलता, मधुरभाषिता से समणीगण का दिल जीत लिया। ध्यान जाप स्वाध्याय से साधना का मार्ग प्रशस्त हुआ।।२।।

असाध्य बीमारी में भी सहनशीलता का परिचय दिया। गुरुवर की अनहद कृपादृष्टि से तप में संयम स्वीकार किया। प्रभुवर के मुख से अनशन पा सौभाग्य सूर्य का जीवन में उदय हुआ।।३।।

दुष्कर दुष्कर अति दुष्कर अनशन कर जीवन को चमका दिया। गुरुचरणों में किया समर्पित तन मन अनशन की सौरभ से जीवन को महका दिया। गुरु कृपा से मन वांछित मनोरथ फलित हुआ आत्मा का कारज सिद्ध हुआ।।

## किया स्वप्न साकार है

#### ● साध्वी रतिप्रभा ●

भारी साहस दिखलाया, किया स्वप्न साकार है। बरसाई प्रभु ने करुणा, कर दिया उद्धार है।।

हम है कितने सौभाग्यी, पाया भैक्षवशासन। स्वामीजी के शासन में, पग पगा जयकार है।।

संयम के समरांगण में, जीवन को झोंक दिया। भारी वेदन की स्थिति में, समता अपार है।।

पुष्पा से पावन बनकर, सचमुच बन गई पावन। नेमानंदन की सन्निधि, पाई सुखकार है।।

चौपड़ा बाफना परिकर, देता बधाई है। अक्षय प्रवण सेवा का, मिला आधार है।।

रग रग में गुरु भक्ति की, वीणा बज रही दिन-रात। अद्भुत श्रद्धा की लौ से, पाया किनार है।।

महानगरी बंबई में तुमने, इतिहास बनाया है। की विलक्षण संघ प्रभावना, गुजित जयकार है।।

साध्वी रतिकला मनोज्ञ, पावन मन में आश्चर्य अपार। कैसी धारी है दृढ़ता दिखाया चमत्कार है।।

लय : प्रभु पार्श्वदेव चरणों में---

## त्रिदिवसीय ग्रे एंड ग्लो कार्यशाला का शुभारंभ बेंगलुरु।

तेरापंथ भवन, गांधीनगर में मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, तेयुप एवं महिला मंडल के तत्वावधान में त्रिदिवसीय संस्कार निर्माण कार्यशाला ग्रे एंड ग्लो का शुभारंभ हुआ। मुनि हिमांशु कुमार जी के नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मुनि हेमंत कुमार जी ने प्रथम सत्र में बच्चों को जीवन विज्ञान, श्वास, महाप्राण ध्वनि आदि के बारे में जानकारी दी एवं प्रयोग करवाए। द्वितीय सत्र मुनि हिमांशु कुमार जी ने जैन धर्म, २४ तीर्थंकर आदि की जानकारी दी। तृतीय सत्र में मुनि हेमंत कुमार जी ने जैन साधु की भिक्षा विधि 'गोचरी' का परिचय प्रस्तुत किया।

चतुर्थ सत्र में मुख्य प्रशिक्षक विनय बैद ने ग्रे एंड ग्लो विषय पर कहानियों के माध्यम से बच्चों को प्रेरित किया। पंचम सत्र में ज्ञानशाला संयोजिका नीता गादिया ने गेम ऑफ इमोशंस का प्रयोग करवाया। सभी सत्रों में विशेष प्रस्तुति देने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। प्रशिक्षक विनय बैद का सम्मान तेयुप अध्यक्ष रजत बैद एवं विमल धारीवाल ने किया।

कार्यशाला में लगभग 9२५ बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। उपस्थित सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कार्यशाला में तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, ज्ञानशाला एवं तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों ने विशेष सहयोग प्रदान किया।



## अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२३ का आयोजन

### हावड़ा।

अणुव्रत समिति, हावड़ा द्वारा अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२३ का जिला स्तरीय आयोजन संपादित हुआ। कार्यक्रम में ६ विद्यालयों-हावड़ा जनता आदर्श विद्यालय फॉर गर्ल्स, सेंट, हेलेन्स स्कूल, श्री हनुमान बालिका विद्यालय, हावड़ा जनता आदर्श विद्यालय (एचएस), श्री जैन विद्यालय फॉर गर्ल्स के विद्यार्थियों की सहभागिता रही। कार्यक्रम दो ग्रुप (५-८ और ९-१२ के विद्यार्थियों) में कुल ७४ विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने चित्रकला, निबंध लेखन, भाषण, कविता तथा गीत गायन प्रतियोगिता में अपनी प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत के सामूहिक संगान के साथ शुभारंभ किया गया। अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया और अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम में अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, टीपीएफ के राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के प्रायोजक प्रकाश मालू, साउथ हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, मंत्री बसंत पटावरी, सहमंत्री मनोज कोचर, तेयुप साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगन दीप बैद सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। विद्यालय से पधारे शिक्षकों ने आदर्श विद्यालय बॉयज के कॉडिनेटर

अशोक सिंह, श्री जैन विद्यालय गर्ल्स स्कूल की संयोजक चंदा, श्री हनुमान बालिका विद्यालय की संयोजक मीता दत्ता आदि की विशेष उपस्थिति रही। सभी का दुपट्टा एवं उपहार द्वारा सम्मान किया गया।

अणुविभा के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन करते हुए विद्यार्थियों को विद्यार्थी आचार संहिता का भी वाचन कराते हुए संकल्पित कराया।

इस अवसर पर उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, प्रकाश मालू, बसंत पटावरी, अशोक सिंह ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार व्यक्त मंत्री विरेंद बोहरा ने किया।

## नवरात्रि अनुष्ठान का आयोजन

### तिरुपुर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में नवरात्रि जप अनुष्ठान' सानंद संपन्न हुआ। साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि हर दिन, हर क्षण, हर समय अपने आप में मंगल होता है पर इन ३६५ दिनों में भी कुछ दिन विशेष माने जाते हैं। उसमें नवरात्र का समय साधना की दृष्टि से तंत्र, मंत्र, यंत्र की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है। सभी धर्मों में मंत्र जप की परंपरा रही है। प्रत्येक अक्षर मंत्र है। मंत्र और साधक दोनों में तादात्म्य नहीं जुड़े तो वह फलवान नहीं बनता। जैन धर्म और तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक आचार्य और अनेक साधु-संत हुए हैं, जिन्होंने अपनी मंत्र साधना से संघ सुरक्षा और आत्म सुरक्षा की है।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने कहा कि जैसे खेती की सुरक्षा के लिए बाड़ की, संयम चारित्र का सुरक्षा के लिए इंद्रियों के संयम की आवश्यकता है वैसे ही स्व-सुरक्षा के लिए मंत्र साधना का रक्षाकवच आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुरक्षा का रक्षाकवच होना चाहिए। रक्षाकवच मजबूत और कठोर बनाने के लिए यह नवरात्रि अनुष्ठान का माध्यम महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह नौ दिन नौ निधि की प्राप्ति के समान है। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका के द्वारा अपनी भावना प्रेषित की। इन नौ दिनों में जयाचार्य के समय की, डालगणी और आचार्यश्री तुलसी के काल की अनेक घटनाएँ चमत्कारी जो श्रद्धा और आस्था के साथ जुड़ी हुई हैं, उसका उल्लेख किया।

## विकास के नए शिखरों को छूने के लिए जरूरी है संयम और अनुशासन

### वापी।

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, वापी द्वारा अणुव्रत व्याख्यान माला का आयोजन तेरापंथ भवन, वापी में किया गया। जिसमें मॉडर्न इंग्लिश स्कूल के छात्र एवं अध्यापकगण उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में वापी के मामलतदार कल्पना बहन उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल ने 'विद्यार्थियों का विकास : अणुव्रत का प्रकाश' विषय पर कहा कि अणुव्रत आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित विशिष्ट आंदोलन है। यह नैतिकता का आंदोलन है। जीवन में नैतिक मूल्यों का अतिरिक्त महत्त्व होता है। जीवन में विकास के मार्ग पर आगे बढ़ना है तो संयम और अनुशासन अति आवश्यक है। आहार का संयम न हो तो शरीर अस्वस्थ हो जाता

है। वाणी का संयम न हो तो पारिवारिक जीवन तार-तार हो जाता है। वाणी में मिठास घुलती है तो बिगड़ी हुई बात भी बन जाती है।

उन्होंने आगे कहा कि अणुव्रत पर्यावरण सुरक्षा का बोध देता है। हम कोई ऐसा कार्य न करें जिससे हमारे आसपास का पर्यावरण दूषित हो। अणुव्रत नशामुक्ति का पैगाम देता है।

वापी के मामलतदार कल्पना पटेल ने कहा कि अणुव्रत शब्द का अर्थ मुझे पता नहीं था, लेकिन आज यहाँ आने के बाद अणुव्रत क्या है यह मेरी समझ में आया है। अणुव्रत वास्तव में सुखमय जीवन का पैगाम है। अणुव्रत को अपनाकर हर व्यक्ति के लिए जरूरी है।

मॉडर्न इंग्लिश स्कूल, वापी के अध्यापक प्रदीप एवं राजकुमार उपाध्याय ने भी अणुव्रत अभियान का स्वागत एवं

समर्थन करते हुए अपने विद्यालय में अणुव्रत के अधिकाधिक कार्यक्रम करने के लिए अणुव्रत समिति को हार्दिक अनुरोध किया। अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष विमल झावक ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया एवं छात्रों को अणुव्रत के संकल्प करवाए। तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय का० सदस्य रमेश कोठारी, तेयुप अध्यक्ष मुकेश बागरेचा, महिला मंडल मंत्री दीपिका भंडारी आदि उपस्थित रहे। अणुव्रत समिति की मंत्री हेमा बोथरा एवं महिला मंडल अध्यक्षा एकता कच्छारा ने भावाभिव्यक्ति दी।

तेममं की बहनों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति, वापी की अध्यक्षा चंदा दुगड़ ने किया। कार्यक्रम की व्यवस्था में निर्मला शेखावत, अध्यापक ईमरानभाई एवं अणुव्रत कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा।

## कन्याओं को स्वावलंबी होना चाहिए

### साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा व मानव सेवा के संयुक्त तत्वावधान में आश्रम की छात्राओं के मध्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य रहता है प्रगति करना, उन्नति करना, सफलता को प्राप्त करना। वही व्यक्ति सफल हो सकता है, जिसके जीवन में सहनशीलता, श्रमशीलता, सेवाभावना, संयम व अच्छा स्वभाव हो वह सफलता को प्राप्त होता है। सहनशीलता आत्मा का विशेष गुण है जो सहता है वह रहता है शेष गिर जाते हैं। क्रोध करने से तन, मन, भाव अस्वस्थ हो जाते हैं, जिसके कारण नाना प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि शिक्षा से जीवन संवरता है, शिक्षा से विवेक जागृत होता है, शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है। अधूरा जीवन खतरनाक होता है। शिक्षा के साथ सुसंस्कारों का होना जरूरी है। बालिकाओं को गुस्सा, मृषा, नशा से दूर रहना चाहिए। मुनिश्री ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया, तेरापंथ कन्या मंडल की सह-प्रभारी सोनम बागरेचा ने विचार रखे। कन्या मंडल की कन्याओं ने नशामुक्ति पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की। पूजा बोथरा ने बंगाली में अनुवाद किया।

## नवाहिनक आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन

### सिवानी।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में नवाहिनक आध्यात्मिक अनुष्ठान का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि नवरात्रि के दिन शक्ति जागरण के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। हमारे भीतर अनंत शक्ति है। हम अनंत शक्ति के स्रोत हैं, जप-तप मंत्रों के प्रयोग से चैतन्य का जागरण होता है। अध्यात्म चेतना जागृत होती है। आत्मा की चार शक्तियाँ हैं-ज्ञान, दर्शन, आनंद और वीर्य। शक्ति का स्रोत हमारी वाणी में है, मन में श्वास में है। इन नौ दिनों में हमने विधिवत तप-जप के साथ सामूहिक अनुष्ठान किया है। एकाग्रता, तन्मयता, तल्लीनता के साथ मंत्रों का प्रयोग किया है। हमारी प्राण शक्ति मजबूत बने, कार्य शक्ति विकसित हो। लंबे समय तक जप करना चाहिए।

साध्वी सुमंगलाजी, साध्वी सुलभयशा जी, साध्वी संबोधयशा जी ने जप अनुष्ठान के प्रयोग करवाए।

◆ गार्हस्थ्य में रहते हुए भी व्यक्ति आंशिक रूप में संयम को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। अणुव्रत का अर्थ है-छोटे-छोटे संकल्प। इसे स्वीकार करके भी मोक्ष की ओर कुछ अंशों में आगे बढ़ा जा सकता है।

- आचार्यश्री महाश्रमण

## तपस्या भौतिक लाभ या यश कीर्ति के लिए नहीं बल्कि आत्म शुद्धि के लिए होनी चाहिए

### उधना।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, उधना के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, उधना में तप अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें अठाई से लेकर मासखमण तप की तपस्या करने वाले तपस्वियों का बहुमान किया गया।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि जैन परंपरा में तपस्या का विशेष महत्त्व है। वर्तमान भव ही नहीं पूर्व भव के भी संचित कर्मों की निर्जरा करने का अमोघ साधन है-तपस्या। तपस्या करने

वाला, तपस्या में सहयोगी बनने वाला एवं तपस्या की अनुमोदना करने वाला भी कर्मों की निर्जरा करता है। तपस्या से भौतिक लाभ हो जाए यह अलग बात है, लेकिन तपस्या भौतिक लाभ के उद्देश्य से नहीं होनी चाहिए। तपस्या के पीछे यश, प्रतिष्ठा या कीर्ति प्राप्त करने का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। तपस्या तो केवल और केवल आत्म शुद्धि के लिए होनी चाहिए। उसके पीछे मात्र कर्म निर्जरा का ही उद्देश्य होना चाहिए।

मुनि अनंत कुमार जी ने अपने

उद्बोधन में आत्मा के ऊर्ध्वारोहण के लिए तपस्या को प्रमुख साधन बताया। उन्होंने एवं मुनि रम्यकुमार जी ने नवरात्रि अनुष्ठान के अंतर्गत जप के प्रयोग भी करवाया। तेरापंथी सभा, उधना के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने स्वागत वक्तव्य में सभी तपस्वियों की त्याग भावना की अनुमोदना की एवं तप अभिनंदन गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन विनोद भटेवरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, उधना के उपाध्यक्ष मुकेश बाबेल ने किया।



## परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के ५७वें राष्ट्रीय अधिवेशन---

### (पृष्ठ 11 का शेष)

वर्ष 2022-2023 के दौरान विभिन्न आयामों में विशिष्ट कार्य करने वाली शाखा परिषदों को सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पदाधिकारीगण ने विभिन्न आयामों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली शाखा परिषदों को मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित किया। अभातेयुप प्रभागीगण एवं योगक्षेम योजना के सहयोगीगण को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रथम सत्र का संचालन दिनेश मरोठी, राकेश जैन एवं संजय भंडारी ने किया।

दिनांक 28 अक्टूबर 2023 को प्रातः सफेद पोशाक और महाराष्ट्र की लोक संस्कृति को ऊजागर करती हुई केसरिया टोपी और दुपट्टे में सजे युवक एक भव्य रैली के साथ जब पूज्य चरणों में पहुंचे तो प्रवास स्थल 'जय जय ज्योति चरण : जय जय महाश्रमण' के उद्घोष से गूज उठा।

मुख्य प्रवचन में मंचीय कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि **गुरुदेव!** अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने 17 सितंबर 1964 से लेकर 28 अक्टूबर 2023 तक लगभग 59 साल का यह सफर तय किया है। अगले वर्ष अभातेयुप अपनी षष्टिपूर्ति मनाने के लिए तैयार है। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद, आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन और पूरी टीम के सहयोग से यत्किंचित आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

अधिवेशन में पूज्य सन्निधि में विशेष रूप से उपस्थित सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता विवेक ओबेरॉय ने कहा कि मैं जब भी आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आता हूँ तो इतनी ऊर्जा मिलती है। हम दिन में कम से कम एक बार अपना फोन चार्ज करते हैं लेकिन हम अपनी आत्मा को और आत्मीय शक्ति को रिचार्ज करना भूल जाते हैं। वह आत्मीय भावित हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान गुरुओं से मिलती है। मैं जन्म से तो जैन नहीं हूँ लेकिन कोशिश करता हूँ कि कर्मों से मैं जैन बन सकूँ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मेरे लिए एक ऐसा संगठन है, जिस पर मुझे बहुत गर्व है। इस संगठन ने रक्तदान का जो काम किया, रिकॉर्ड बनाए, उनसे इस संगठन के साथ देश का भी गौरव बढ़ा है।

अधिवेशन में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रूणवाल ग्रुप के चेयरमैन सुभाष रूणवाल ने अपने विचार किए। उन्होंने युवाओं को अपनी विकास यात्रा के बारे में बताते हुए जीवन में सफलता प्राप्त करने के कुछ सूत्र बताए।

अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि **गुरुदेव!** आज अभातेयुप का वार्षिक अधिवेशन है। इस अधिवेशन में देश भर से उपस्थित यह युवा कार्यकर्ता आपके सैनानी हैं। यह तेरापंथ के सैनानियों का कुंभ मेला है। यह कार्यकर्ता वर्ष भर खूब काम करते हैं, बड़ी मेहनत करते हैं, अपना सब कुछ निचावर करते हैं और फिर यह सभी वार्षिक अधिवेशन में आचार्य प्रवर के पावर हाऊस से ऊर्जा, भावित प्राप्त करने एवं पुनः नये जोश के साथ कार्य करने हेतु रिचार्ज होने के लिए उपस्थित होते हैं।

28 अक्टूबर के दूसरे सत्र के प्रारंभ में अभातेयुप के अंतर्गत कार्यरत कर्मिगण का राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा सम्मान किया गया। इस सत्र के अंतर्गत युवाओं के लिए पैनेल डिस्कसन का क्रम रखा गया। इस डिस्कसन में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाईडन के सलाहकार अजय भूतोड़िया, जे. कुमार इन्फ्रास्ट्रक्चर लि. के चेयरमैन जगदीश प्रसाद गुप्ता एवं के.एल दूगड़ ग्रुप, के चेयरमैन किशनलाल दूगड़ ने अपने जीवन व व्यापार की शून्य से शिखर की यात्रा को प्रश्नोत्तरी के रूप में प्रस्तुत किया। उनके जीवन के विविध प्रसंगों के बारे में अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता एवं संगठन मंत्री श्रैयांस कोठारी ने अलग-अलग प्रश्न प्रस्तुत किए, जिनके उत्तर आमंत्रित विशिष्टगण ने रोचक रूप में प्रस्तुत किए। इस प्रेरक सत्र से युवाओं को जीवन और व्यापार में सफलता प्राप्त करने के अनेक रहस्य जानने को मिले।

मुनिश्री दिनेशकुमारजी एवं अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी ने पावन उद्बोधन प्रदान किया।

वर्ष 2022-23 में सेवा, संस्कार एवं संगठन के क्षेत्र में विशेष कार्य करने वाली भाखा परिषदों को विशिष्ट एवं तीनों क्षेत्रों में विशेष कार्य करने वाली परिषद् को श्रेष्ठ परिषद् के रूप में चयन की घोषणा राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा की गई। देश भर की भाखा परिषदों से भरकर प्राप्त भाखा प्रतिवेदनों के आधार पर अभातेयुप द्वारा गठित चयन समिति द्वारा मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन की समुचित जांच के आधार पर राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान की घोषणा की गई, जो निम्न प्रकार है—

### सेवा, संस्कार एवं संगठन तीनों में श्रेष्ठ परिषद्

सूरत

### सेवा में विशिष्ट परिषद्

चेन्नई

### संस्कार में विशिष्ट परिषद्

अहमदाबाद

### संगठन में विशिष्ट परिषद्

विजयनगर

### सदस्य संख्या के अनुसार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त परिषदें

सेवा :

#### 1 से 50 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – सैंथिया, द्वितीय – कानपुर, तृतीय – आदमपुर मंडी

#### 51 से 200 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – सरदारपुरा एवं राजाजीनगर, द्वितीय – पाली, तृतीय – आर. आर. नगर

#### 201 से 500 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – उत्तर हावड़ा एवं पूर्वांचल कोलकाता, द्वितीय – सिलीगुड़ी, तृतीय – साउथ कोलकाता

#### 500 से ज्यादा सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – गांधीनगर-बैंगलोर, द्वितीय – गुवाहाटी

संस्कार :

#### 1 से 50 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – सादुलपुर एवं सिरसा, द्वितीय – सुनाम, तृतीय – कोपरी

#### 51 से 200 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – बारडोली, द्वितीय – सांताक्रुज, तृतीय – भुज-कच्छ

#### 201 से 500 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – भीलवाड़ा, द्वितीय – पर्वत पाटिया एवं गंगाशहर, तृतीय – कांदिवली

#### 500 से ज्यादा सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – उधना, द्वितीय – दिल्ली

संगठन :

#### 1 से 50 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – कोटा, द्वितीय – मानसा मंडी, तृतीय – दौलतगढ़

#### 51 से 200 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – नालासोपारा, द्वितीय – चेम्बूर, तृतीय – पालघर, वसई रोड़ एवं ऐरोली

#### 201 से 500 सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – मलाड़, द्वितीय – साउथ हावड़ा, तृतीय – बालोतरा

#### 500 से ज्यादा सदस्यों वाली परिषदें

प्रथम – उदयपुर, द्वितीय – हैदराबाद एवं जयपुर

उक्त सभी चयनित परिषदों के अध्यक्ष, पदाधिकारीगण को अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रबंध मंडल द्वारा प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इसके पश्चात इसके पश्चात अभातेयुप साधारण सदन का क्रम प्रारंभ हुआ, जिसमें एजेंडानुसार कार्यवाही की गई। महामंत्री पवन मांडोते ने वर्ष 2022-23 का प्रगति प्रतिवेदन, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा ने वित्तीय वर्ष 2022-23 का अंकेक्षित आय-व्यय विवरण प्रस्तुत किया। उपस्थित संभागीगण द्वारा भानिवारीय सामायिक सामूहिक रूप से की गई। सत्र के द्वितीय चरण में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अपने द्विवर्षीय कार्यकाल की गति-प्रगति के मुख्य बिंदु प्रस्तुत करते हुए पूज्यप्रवर व आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की एवं सभी से प्राप्त सहयोग हेतु आभार ज्ञापित किया तथा सत्र 2021-23 के कार्यकाल के समापन की घोषणा की। सत्र 2023-25 के लिए अध्यक्ष पद के चुनाव की प्रक्रिया मुख्य चुनाव अधिकारी अविनाश नाहर एवं सहचुनाव अधिकारी सलिल लोढ़ा के द्वारा सम्पादित करवाई गई, जिसमें रमेश डागा, कंटालिया-चेन्नई का सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर निर्वाचन हुआ।

29 अक्टूबर 2023 को प्रवचन कार्यक्रम के दौरान आयोजित सत्र में परम पूज्य आचार्य प्रवर के प्रवचन के उपरांत अभातेयुप निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश डागा को अध्यक्षीय पद की विधिवत शपथ ग्रहण करवायी। नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश डागा ने अपनी टीम की घोषणा की एवं सभी को भापथ स्वीकार करवायी। परम पूज्य आचार्य प्रवर ने निवर्तमान अध्यक्ष एवं नवनिर्वाचित अध्यक्ष को मंगलपाठ सुनाते हुए आशीर्वाद प्रदान किया एवं उसके पश्चात पूरी टीम को अलग से मंगल पाठ सुनाया।

नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपना प्रथम अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि **भन्ते!** भिक्षु स्वामी की जन्म स्थली कंटालिया मेरी भी जन्मभूमि है। इसी कारण जन्म से ही तेरापंथ रग-रग मे बसा हुआ है। बचपन से लेकर आज तक इस संघ के संयम रत्न चारित्रात्माओं के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला, उनसे आध्यात्मिक पोषण के साथ संघ के संस्कार मिले। इस संघ के युवाओं के संगठन तेयुप व अभातेयुप से जुड़ने का अवसर मिला। लगभग 17 वर्षों से मेरा इस संगठन से गहरा नाता रहा, जो आज भी गतिमान है।

गुरुदेव आपश्री की कृपा से आज मैंने इस विलक्षण संगठन के अध्यक्ष पद की भापथ ली है, आपके आशीर्वाद, आपके मार्गदर्शन, आपकी भावित के साथ इस संगठन को शिखरों तक पहुंचाने के लिए मैं संकल्पित हूँ। आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमारजी के संरक्षण में नये-पुराने आयामों के साथ किशोरों व युवाओं में आध्यात्मिक व लोकोत्तर पोषण का प्रयास करूंगा एवं समाज के साथ मिलकर मानव सेवा के लौकिक कार्य भी करेंगे। हमारी आने वाली भावी पीढ़ी संस्कारों के साथ आगे बढ़े, इस हेतु सलक्ष्य प्रयास करेंगे। गुरुदेव आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दें कि इस युवा भावित के साथ मिलकर इसकी आभा व सौरभ में और अभिवृद्धि कर सकूँ।

इस अवसर पर अभातेयुप द्वारा वर्ष 2023 का आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार लाडनू निवासी केलिफोर्निया (अमेरिका) प्रवासी अजय भूतोड़िया को प्रदान किया गया। अजय भूतोड़िया ने अपने भाव व्यक्त करते हुए आचार्य प्रवर के प्रति कृतज्ञता और अभातेयुप के प्रति आभार व्यक्त किया।

अधिवेशन में समागत युवाओं की आवास, भोजन, आयोजन आदि व्यवस्थाओं में अभातेयुप सहमंत्री एवं अधिवेशन संयोजक भूपेश कोठारी, के कुशल निर्देशन में सहसंयोजक नरेश सोनी, दीपक समदड़िया तथा अभातेयुप मुम्बई टीम के साथियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति, मुम्बई द्वारा विभिन्न व्यवस्थाएं सुचारू रूप से उपलब्ध हो पाई। अधिवेशन में आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, महेश बाफना, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, पूर्व अध्यक्ष धरमचंद लूंकड़, मुख्य न्यासी रमेशचंद बोहरा, मंत्री सलिल लोढ़ा, अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, मर्यादा कुमार कोठारी, अविनाश नाहर, बी.सी जैन भलावत, विमल कटारिया, संदीप कोठारी आदि अनेक महानुभावों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

## परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के 57वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'नवोदय' का हुआ भव्य आयोजन

### तेरापंथ युवक परिषद्, सूरत बनी 'श्रेष्ठ परिषद्', अहमदाबाद, विजयनगर और चेन्नई ने जीता 'विशिष्ट परिषद्' का खिताब



#### नंदनवन, मुंबई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के 57वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'नवोदय- न्यू इंडिया : ब्राइट इंडिया' का भव्य आयोजन परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में दिनांक 27-28-29 अक्टूबर 2023 को नंदनवन, मुंबई में हुआ।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने युवाओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आज अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का यह वार्षिक अधिवेशन हो रहा है। यह युवकों का इतना अच्छा संगठन है। कितने-कितने युवक किशोर भी इसके साथ जुड़े हुए हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा अनेक गतिविधियां चल रही हैं और अनेक सेवा के कार्य भी हैं, आध्यात्मिकता के भी कार्य हैं। युवकों

को संगठन के साथ जुड़ने से मानो एक अच्छा अवसर, अच्छी बातें सुनने का, जानने का और फिर अपनाने का मौका मिल सकता है। पूज्य गुरुदेव ने युवाओं को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि नैतिकता, ईमानदारी आदि गुणों के विकास करने हेतु जीवन में आदमी अनेक कलाओं में निष्णात होता है, पर व्यक्ति अगर संयम, ईमानदारी आदि की कलाओं को नहीं सीखता तो उसका अन्य कलाओं में निष्णात होना गौण हो जाता है। युवा अवस्था में शक्ति भी अच्छी हो सकती है। उस शक्ति का बढ़िया उपयोग किया जाए। युवा व्यक्ति शक्ति का सदुपयोग करे तो वह एक प्रकार की शक्ति की पूजा हो सकती है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् खूब अच्छी धार्मिक, आध्यात्मिक गतिविधियों में आगे बढ़ती रहे। इसका

विकास होता रहे, युवा भी आध्यात्मिक उन्नयन की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज का युग टेक्नॉलोजी का युग है। टेक्नॉलोजी के युग में भी हमारे युवक अध्यात्म के मार्ग के बारे में चिंतन कर रहे हैं और आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। आज का युग डिजिटल युग है और हर कार्य डिजिटल हो रहा है। डिजिटल युग में हमारे युवक तपोयज्ञ कर रहे हैं, तपस्या कर रहे हैं। आहार की तपस्या करना आसान है किंतु आज के युग में डिजिटल फास्टिंग (उपवास) करना कठिन है। ऐसे युग में हमारे युवक डिजिटल फास्टिंग की ओर आगे बढ़ रहे हैं। संगठन की मजबूती के लिए तेरापंथ युवक परिषद् के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ताओं का पीसफुल माइंड, पॉजिटिव माइंड एवं पॉवरफुल माइंड होना आवश्यक है। युवक अपने मन को पीसफुल, पॉजिटिव और पावरफुल बनाएं तो निश्चित रूप से अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ते रहेंगे।

अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी ने अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए फरमाया कि आचार्यश्री तुलसी के उस कालजयी चिंतन को नमन, जिसने युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए इस संगठन को जन्म दिया। अभातेयुप में एक से बढ़कर एक सशक्त नेतृत्व हुए हैं, जिन्होंने इस संगठन में अपनी दुर्लभ सेवाएं दी हैं और दे रहे हैं। देश भर के कार्यकर्ताओं, युवाओं को जब मैं देखता हूँ कि उनके भीतर क्या सपने हैं, क्या जोश है। अभातेयुप की भाखा परिषदों की पैरामीटर के अनुसार छोटी, मध्यम और बड़ी श्रेणी निर्धारित है लेकिन मैं समझता हूँ जिस परिषद् के सपने बड़े हैं, वह परिषद् वास्तव में बड़ी परिषद् है। जिस संगठन के कार्यकर्ताओं में जोश और उत्साह है, वह संगठन छोटा होकर भी बहुत बड़ा है। आप जिस संगठन के सदस्य हो, उससे दूसरे सम्प्रदाय ही नहीं, सरकार भी प्रेरित होती है क्योंकि यह कुछ कर दिखाने वाला संगठन है। इन दो वर्षों में ऐसी बुनियादी मजबूती संगठन को मिली है। इन दो वर्षों में कार्यकर्ता, कार्यालय, कार्यक्रम एवं कोष की थीम के आधार पर जो कार्य हुआ है, वह निश्चित रूप से संगठन को मजबूती प्रदान करने वाला है। आप लोगों को 21 से 45 वर्ष की उम्र का जो समय अभातेयुप के लिए मिला है, उसमें दुर्लभ इतिहास बनाया जा सकता है। अभातेयुप विशेष

है, अद्वितीय है, उसका मंत्र है एकजुटता, एक गुरु और एक विधान की गौरवशाली परंपरा। गुरु ने जिस पर दृष्टिपात कर आशीर्वाद दिया, वही सिरमौर बन गया। यही एकता और यही निष्ठा हमें अद्वितीय बनाती है। एकता ही हमारा मौलिक आधार है।

मुनिश्री सिद्धकुमारजी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए फरमाया कि जब तक हमारा विजन सही नहीं होगा तब तक हम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसलिए आवश्यक है कि हमारा विजन सही और सम्यक हो।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाचन एवं मंगलपाठ के साथ अधिवेशन का आगाज हुआ। नंदनवन परिसर में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने पूरे प्रबंध मंडल सहित संभागीगण की उपस्थिति में जैन ध्वजारोहण किया। अभातेयुप टीम सदस्यों द्वारा विजय गीत के सामूहिक संगान के साथ मंगलाचरण से उद्घाटन सत्र का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

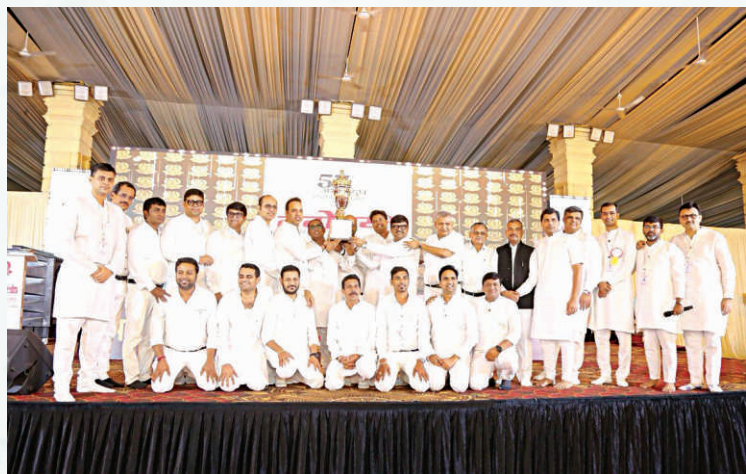
राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने त्रिदिवसीय अधिवेशन के शुभारंभ की घोषणा करते हुए कहा कि दो वर्षों का यह कार्यकाल परम पूज्य आचार्य प्रवर के पावन आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि से तथा आप सभी साथियों के सहयोग, श्रम व सहभागिता से सानंद सम्पन्न होने जा रहा है। मैंने इस संघ और

संगठन से बहुत कुछ पाया है, जो जीवन भर एक अमूल्य निधि के रूप में मेरे साथ रहेगा। इस संघ और संगठन का ऋण उतार पाना कठिन है। मैं जीवन भर कृतज्ञ बना रहूंगा।

सहमंत्री द्वितीय एवं अधिवेशन संयोजक भूपेश कोठारी ने संयोजकीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए मुंबई की धरा पर सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। महाराष्ट्र की लोक संस्कृति के अद्भुत प्रस्तुतिकरण के साथ अधिवेशन का स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। विडियो प्रेजेंटेशन के साथ अधिवेशन का थीम गीत प्रस्तुत किया गया।

महामंत्री पवन मांडोत ने राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा कार्यकाल के प्रारंभ में सुचिंतित रूप से प्रस्तुत चार बिंदुओं—कार्यकर्ता, कार्यालय, कार्यक्रम एवं कोष के संदर्भ में दो वर्षों में किए गए कार्यों एवं कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया। महामंत्री महोदय ने अभातेयुप के विभिन्न आध्यात्मिक और सामाजिक आयामों की दो वर्षों की गति-प्रगति की संक्षिप्त अवगति दी।

बॉलीवुड अभिनेता जैकी श्रॉफ ने अपने अंदाज में युवाओं को अपने जीवन में संस्कारों एवं संस्कृति की सुरक्षा करते हुए गुरुजनों के बताये सन्मार्ग पर आगे बढ़ने की सलाह दी। उन्होंने माता-पिता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया। (शेष पृष्ठ 10 पर)





## मोक्ष प्राप्ति हो जीवन जीने का परम लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, 9 नवंबर, 2023

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमारी इस लोकाकाश की स्थिति में या सृष्टि में चार प्रकार के संसारी प्राणी हैं और एक सिद्ध है। जीवों के दो प्रकार हो जाते हैं - सिद्ध और संसारी। सिद्ध जीव जन्म-मरण की परंपरा से विप्रमुक्त होते हैं। उनका पुनर्जन्म नहीं होता। आत्मा को अमर और अरूपी कहा गया है। यथाख्यात वात आत्मा के संदर्भ में सिद्धों पर बिलकुल लागू होती है। सिद्धों की आत्मा अमूर्त-अरूपी है।

जैन दर्शन में अनेक सिद्धांत हैं उनमें एक सिद्धांत यह आत्मवाद है। पूर्णतया शुद्ध अमूर्त रूप केवली या चौदहवें गुणस्थान वाले के नहीं होता है। अन्य संसारी आत्माएँ विशुद्ध स्वरूप वाली नहीं होती है। चार गतियों में संसारी जीव विभक्त है। चारों



की सन्निधि में शुरू हुआ। सलिल लोढ़ा ने इसके बारे में समझाया। जैविभा द्वारा अनेक सेवा के आयाम गतिमान हैं। नेमचंद जेसराज सेखानी द्वारा संचालित पाना देवी सेखानी की स्मृति में संघ सेवा पुरस्कार प्रदान किया जाता है। वर्ष 2020 का पुरस्कार ख्यालीलाल तातेड़, 2021 का पुरस्कार किशनलाल डागलिया को प्रदान किया गया। सेखानी परिवार से सरिता सेखानी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। शतायु जेसराज सेखानी की भी गरिमापूर्ण उपस्थिति रही।

दोनों पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं का परिचय दिया गया। ख्यालीलाल तातेड़ एवं किशनलाल डागलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वाचन फरमाया। मुंबई की चारों संप्रदाय की महिला मंडल की बहनें पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुँची। तरुणा बोहरा ने अपनी भावना



गतियों से छुटकारा हो जाए वो मोक्ष की स्थिति होती है। आत्मा समस्त कर्म क्षय कर अपने विशुद्ध स्वरूप में अवस्थित हो जाती है, वह अवस्था मोक्ष है।

जीवन जीने का परम लक्ष्य बनाना चाहिए - मोक्ष की प्राप्ति। पूर्व कर्मों को क्षय करने के लिए इस शरीर को धारण करें। दुःख मुक्ति की साधना इस मनुष्य जन्म से

करें, यह मनुष्य जन्म की सार्थकता होती है। मोक्ष शाश्वत दुःख मुक्ति की साधना है। आत्मा चार गति - चौरासी लाख जीव योनियों में भ्रमण करती रहती है। जैन शासन में त्याग-तपस्या की सूक्ष्म चर्या बताई गई है।

वर्तमान में साधु पाँच महाव्रती होते हैं। भगवान महावीर का निर्वाण दिवस भी

कार्तिक मास में आ रहा है। भगवान महावीर की 2500वीं निर्वाण शताब्दी पर एक ग्रंथ तैयार हुआ था - समण सूतं। जो जैन शासन सम्मत था। एक प्रतीक और एक ध्वज भी सम्मत हुआ था। जैन समाज में अनेकता में भी एकता है। जैन शासन की एकता नवकार महामंत्र, भक्तामर और तत्त्वार्थ सूत्र में देखी जा सकती है। भगवान महावीर सभी के आराध्य हैं। सामने 2550वाँ निर्वाण दिवस आ रहा है।

जैन शासन में अहिंसा, संयम, तप, आत्मवाद, कर्मवाद की बात है। दिगंबर-श्वेतांबर आगमों में काफ़ी समानता है। श्वेतांबरों में भी कुछ भिन्नताएँ हैं। सबमें मैत्रीपूर्ण व्यवहार बना रहे। अध्यात्म की साधना अच्छी चलती रहे। जैन शासन में चार तीर्थ हैं। तीर्थ करने वाले तीर्थकर होते हैं। चारों तीर्थ साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करते रहें। गृहस्थों के परिवारों में अच्छे संस्कार रहें।



हम सबकी अहिंसायुक्त जीवनशैली रहे। अनेकांतवाद-स्यादवाद भी जैन शासन का सिद्धांत है। वांट और नीड पर ध्यान दें। इच्छाओं का सीमाकरण हो। भोगोपभोग की भी सीमा हो। जैन शासन के सिद्धांतों के अनुरूप जीवनशैली हो।

जैन विश्वभारती द्वारा संघ सेवा पुरस्कार समारोह का आयोजन पूज्यप्रवर

अभिव्यक्त की। बहनों द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वाचन फरमाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी का भी मंगल उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## नशे की लत छुड़ाने के लिए हृदय परिवर्तन आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, 8 नवंबर, 2023

नशामुक्ति अभियान प्रेरक, जन-जन को नशा मुक्त बनाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक जगत में मोक्ष का मानो सर्वोपरि महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। अध्यात्म की साधना का एक अंतिम लक्ष्य है - मोक्ष की प्राप्ति। सर्व दुःखमुक्ति। प्रश्न होता है, मोक्ष की प्राप्ति क्यों? इसलिए कि वहाँ कोई दुःख नहीं है, वहाँ एकमात्र सुख ही सुख होता है। जन्म-मृत्यु, बीमारी, रोग, शोक कोई प्रकार का दुख नहीं। पूर्णतया निर्विकारता और शाश्वत सुख की स्थिति। मोक्ष प्राप्ति इस मानव जीवन का परम लक्ष्य बनाना चाहिए।

जब सर्वज्ञान प्रकाशित हो जाएगा, अज्ञान-मोह का विवर्जन हो जाएगा, राग-द्वेष का क्षय हो जाएगा तो हमारी आत्मा एकांत सुख मोक्ष को प्राप्त हो सकेगी। हमारे भीतर संस्कारों का जगत है। सद्-असद् दोनों प्रकार के संस्कार होते हैं। अज्ञान और मोह के कारण व्यक्ति गलत काम कर सकता है। काम और क्रोध व्यक्ति को अपराध की ओर ढकेलते हैं।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन आगे बढ़ाया था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अणुव्रत के कार्यों में गति दी थी। ड्रग्स की आदत के निवारण के लिए आज यह सेमिनार हो रहा है। अणुव्रत विश्वभारती ने नशामुक्ति अभियान का कार्य हाथ में

लिया है। ध्यान-कायोत्सर्ग से भी नशे की आदत को छुड़ाने के प्रयास किए जा सकते हैं। अध्यात्म योग साधना से खराब संस्कारों को समूल मिटाने का कार्य किया जा सकता है। सम्यक् ज्ञान के द्वारा लोगों को नशे के भयंकर परिणामों को समझाया जा सकता है।

आज सरकार व डॉक्टर्स द्वारा भी नशे से होने वाले नुकसान को समझाया जा रहा है और नशे की आदत से बाहर निकाला जा सकता है। ड्रग्स निवारण में अनेकों की शक्ति लगी है। हृदय परिवर्तन से भी लोगों की नशे की आदत को दूर किया जा सकता है। साधु-संत उपदेश से लोगों के गलत संस्कारों को समझकर दूर कर सकते हैं। पुरुषार्थ होता रहे। आदमी अच्छा आदमी बने।

आज साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का दीक्षा दिवस है। 39 वर्ष पूर्व आप समण श्रेणी से साध्वी समाज में आई थी। अब आप साध्वियों में प्रमुख हैं। साध्वीवर्या नंबर दो पर हैं। लोगों का आध्यात्मिक उत्थान हो यह प्रयास-विकास होता रहे।

पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में अणुविभा के निर्देशन में Elevate. Proud to be Drug free डॉक्टर्स का राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन शुरू हुआ। अशोक कोठारी, अविनाश नाहर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। वीडियो के द्वारा ड्रग्स के नुकसान को समझाया गया। डॉ० एस०वी० खानवलकर, डॉ० गौतम भंसाली, डॉ० लक्ष्मण ने ड्रग्स के नुकसान के कारण कितना

शारीरिक नुकसान होता है, उसको समझाया। आईपीएस मधुकर पांडे, विधायक गीता जैन, आईपीएस संजय कुमार सिंह, मनोज मुंतसे, महाराष्ट्र सरकार के मंत्री सुधीर, लेफ्टिनेंट कर्नल आशीष, ललन तिवारी, आईपीएस सचिन जैन ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने नशामुक्ति के संकल्प करवाए। सुमति गोठी ने सभी की ओर से इस अभियान को विश्व स्तर पर पहुँचाने का संकल्प लिया। तेजकरण सुराणा ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।